नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 093
दि. 04.01.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

लैटिन अमेरिका में युद्ध की आहट: वेनेजुएला संकट ने दुनिया को फिर दो ध्रुवों में बांटा

(जीएनएस)। काराकस। वेनेजुएला एक बार फिर वैश्विक राजनीति के केंद्र में आ खड़ा हुआ है। बीती रात हुए अमेरिकी सैन्य हमले और राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को पकड़ने के अमेरिकी दावे ने न सिर्फ लैटिन अमेरिका बल्कि पूरी दुनिया में हलचल मचा दी है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा सोशल मीडिया पर किए गए ऐलान के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति में उथल-पुथल तेज हो गई है। ट्रम्प ने दावा किया कि वेनेजुएला के राष्ट्रपति मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया एडेला अमेरिकी सैनिकों की हिरासत में हैं और उन्हें देश से बाहर ले जाया गया है। इस दावे के साथ ही यह संकट केवल कूटनीतिक नहीं रहा, बल्कि एक खुले सैन्य टकराव का रूप ले चुका है।

वेनेजुएला में बीती रात का मंजर किसी भयावह सपने से कम नहीं था। रात के अंधेरे में अचानक तेज धमाकों की आवाजें गूंजीं। राजधानी काराकस समेत चार बड़े शहरों में अमेरिकी लड़ाकू विमानों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। लोगों की नींद गोलियों और विस्फोटों की आवाज से खुली। कुछ ही मिनटों में पूरा शहर अफरा-तफरी में डूब गया। घबराए लोग घरों से बाहर निकल आए, किसी को समझ नहीं आ रहा था कि यह कोई सैन्य अभ्यास है या असली हमला। आसमान में बेहद नीचे उड़ते लड़ाकू विमानों की आवाज से लोगों के दिल दहल गए। कई इलाकों में बिजली गुल हो गई और सड़कों पर सन्नाटा पसर गया। कुछ घंटों के भीतर ही राजधानी की तस्वीर बदल चुकी थी। राष्ट्रपति भवन मिराफ्लोरेस के आसपास भारी हथियारों से लैस सुरक्षाबलों की तैनाती दिखाई दी, लेकिन शहर के बड़े हिस्से में डर और खामोशी का माहौल छाया रहा।

अमेरिकी हमले के कुछ ही घंटों बाद वेनेजुएला सरकार की ओर से बयान आया कि देश में आपातकाल लागू कर दिया गया है। राष्ट्रपति मादुरो ने अपने संदेश में कहा कि यह हमला देश की संप्रभुता पर सीधा आक्रमण है और वेनेजुएला इसका जवाब देगा। हालांकि उनके इस बयान के महज एक घंटे बाद ही अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने मादुरो को पकड़ने का दावा कर पूरी दुनिया को चौंका दिया। अमेरिका का कहना है कि मादुरो पर अमेरिका में मुकदमा चलाने की तैयारी है और उन पर अंतरराष्ट्रीय अपराधों, अवैध गतिविधियों और हिंसा को बढ़ावा देने

के गंभीर आरोप हैं। इस दावे ने स्थिति को और विस्फोटक बना दिया है।

अमेरिका का तर्क है कि वेनेजुएला की सरकार लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बनी हुई थी। अमेरिकी प्रशासन के मुताबिक मादुरो शासन के दौरान लोकतंत्र पूरी तरह खत्म हो चुका है, मानवाधिकारों का खुलेआम उल्लंघन हो रहा था और देश को अपराध व हिंसा के दलदल में धकेल दिया गया था। अमेरिका यह भी दावा करता है कि वेनेजुएला से उसके खिलाफ साजिशें रची जा रही थीं, जिसे रोकना जरूरी हो गया था। इन्हीं कारणों को आधार बनाकर अमेरिका ने सैन्य कार्रवाई को जायज ठहराने की कोशिश की है। हालांकि इस दावे को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय एकमत नहीं है।

अमेरिकी कार्रवाई के बाद रूस, ईरान और क्यूबा खुलकर वेनेजुएला के समर्थन में उतर आए हैं। रूस ने इस हमले को 'सशस्त्र आक्रमण' करार देते हुए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आपात बैठक बुलाने की मांग की है। रूसी विदेश मंत्रालय ने साफ कहा है कि किसी भी संप्रभु देश को बिना बाहरी सैन्य हस्तक्षेप के अपने भविष्य का फैसला करने का अधिकार है। ईरान ने भी अमेरिकी कार्रवाई को अंतरराष्ट्रीय कानून का खुला उल्लंघन बताया है और चेतावनी दी है कि ऐसे कदम दुनिया को और अस्थिरता की ओर धकेल सकते हैं। क्यूबा समेत कई लैटिन अमेरिकी देशों ने भी अमेरिका के इस कदम पर गंभीर चिंता जताई है। कोलंबिया ने आशंका जताई है कि इस संघर्ष के चलते वेनेजुएला से बड़े पैमाने पर शरणार्थियों का पलायन हो सकता है, जिससे पूरे क्षेत्र में मानवीय संकट खड़ा हो जाएगा।

अमेरिका के भीतर भी इस कार्रवाई को लेकर सवाल उठने लगे हैं। वहां के सांसदों और कानूनी विशेषज्ञों का एक वर्ग कह रहा है कि संसद की अनुमति या युद्ध की औपचारिक घोषणा के बिना किसी संप्रभु देश पर हमला करना अमेरिकी संविधान और अंतरराष्ट्रीय कानून दोनों के खिलाफ है। आलोचकों का मानना है कि यह कदम अमेरिका को एक संवैधानिक संकट की ओर ले जा सकता है। दूसरी ओर अमेरिकी प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी इसे 'वेनेजुएला के लिए नया सवेरा' बता रहे हैं और दावा कर रहे हैं कि तानाशाही का अंत हो चुका है।

मादुरो के सत्ता से हटने या गिरफ्तारी के दावों के बीच वेनेजुएला के भविष्य को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अब देश में सत्ता शून्य की स्थिति बन सकती है। विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो और एडमंडो गोंजालेज के नाम सामने आ रहे हैं। बताया जा रहा है कि इन दोनों को देश की बड़ी आबादी का समर्थन प्राप्त है और वे अंतरिम सरकार का नेतृत्व कर सकते हैं। अमेरिका पहले ही एडमंडो गोंजालेज को वेनेजुएला का वैध नेता मान चुका है, क्योंकि 2024 के चुनावों में उन्होंने मादुरो को हराने का दावा किया गया था, जिसे मादुरो सरकार ने मान्यता नहीं दी थी। विशेषज्ञों का कहना है कि मारिया मचाडो में नेतृत्व क्षमता और ईमानदारी है, लेकिन मौजूदा हालात में सत्ता हस्तांतरण आसान नहीं होगा।

वेनेजुएला संकट अब सिर्फ एक देश तक सीमित मामला नहीं रह गया है। यह वैश्विक शक्ति संतुलन, अंतरराष्ट्रीय कानून और संप्रभुता के सवालों से जुड़ गया है। अमेरिका की सैन्य कार्रवाई से दुनिया एक बार फिर दो खेमों में बंटती नजर आ रही है। एक ओर अमेरिका और उसके समर्थक देश हैं, तो दूसरी ओर रूस, ईरान और उनके सहयोगी। इस टकराव का असर वैश्विक राजनीति, तेल बाजारों और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा पर भी पड़ सकता है। वेनेजुएला पहले से ही आर्थिक संकट, महंगाई और बेरोजगारी से जूझ रहा है। ऐसे में सैन्य संघर्ष ने वहां के आम नागरिकों की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं।

फिलहाल पूरी दुनिया की निगाहें वेनेजुएला पर टिकी हैं। यह साफ नहीं है कि मादुरो वास्तव में अमेरिकी हिरासत में हैं या यह सिर्फ राजनीतिक दबाव बनाने की रणनीति है। लेकिन इतना तय है कि इस घटना ने लैटिन अमेरिका को एक नए और खतरनाक मोड़ पर ला खड़ा किया है। आने वाले दिन यह तय करेंगे कि यह संकट किसी कूटनीतिक समाधान की ओर बढ़ेगा या दुनिया एक और लंबे संघर्ष की गवाह बनेगी।

सुकमा और बीजापुर में बड़े नक्सल अभियान में 14 माओवादी ढेर, बरामद भारी हथियार

(जीएनएस)। बीजापुर। छत्तीसगढ़ के दक्षिणी बस्तर संभाग में शनिवार को सुरक्षाबलों ने एक बड़े और संगठित नक्सल विरोधी अभियान को अंजाम देते हुए कुल 14 माओवादियों को मार गिराया। यह अभियान सुकमा और बीजापुर जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों में नक्सलियों की मौजूदगी की सटीक जानकारी मिलने के बाद शुरू किया गया था। जिला रिजर्व गार्ड (DRG) की टीमों को तड़के ही तलाशी अभियान के लिए रवाना किया गया। बीजापुर में सुबह करीब 5 बजे और सुकमा में 8 बजे के आसपास सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच आमना-सामना हुआ, जिसके बाद दोनों ओर से रुक-रुक कर भारी गोलीबारी हुई। मुठभेड़ के दौरान सुरक्षाबलों ने घातक और आधुनिक हथियारों से लैस नक्सलियों का सामना किया। अब तक मिली जानकारी के अनुसार, सुकमा जिले से 12 और बीजापुर जिले से 2 नक्सली मारे गए हैं। इन मारे गए नक्सलियों के पास से बड़ी मात्रा में हथियार और युद्ध सामग्री बरामद की गई है, जिनमें एके-47 (AK-47), इंसास (INSAS) और एसएलआर (SLR) राइफल्स शामिल हैं। बरामद हथियारों और उपकरणों से यह स्पष्ट होता है कि मारे गए माओवादी किसी बड़े और संगठित हमले की योजना बना रहे थे। सुरक्षाबलों की इस सफलता को बस्तर क्षेत्र में नक्सलवाद की कमर तोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

अधिकारियों ने बताया कि ऑपरेशन अभी भी जंगल के भीतरी इलाकों में जारी है, और सुरक्षा कारणों से ऑपरेशन में शामिल जवानों की संख्या और ठोस स्थान जैसी संवेदनशील जानकारियां फिलहाल साझा नहीं की जा रही हैं। पुलिस के आंकड़ों के अनुसार, इस साल की शुरुआत में ही अब तक 14 नक्सली मारे जा चुके हैं। जबकि पिछले वर्ष की तुलना में यह संख्या 285 थी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सुरक्षाबलों की नक्सल विरोधी कार्रवाई लगातार जारी है और उनकी रणनीति प्रभावशाली साबित हो रही है। सुरक्षाबलों के अनुसार, बरामद हथियार और मलबा यह संकेत देते हैं कि माओवादी इलाके में बड़े हमलों की तैयारी कर रहे थे। इसलिए जंगल और ग्रामीण इलाकों में सतर्कता बढ़ा दी गई है। स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि नक्सलियों के खिलाफ अभियान के दौरान नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। आसपास के गांवों में अतिरिक्त पुलिस गश्त और सुरक्षा उपाय किए जा रहे हैं ताकि किसी तरह की अप्रिय घटना न हो। विशेषज्ञों का मानना है कि बस्तर रेंज में सुरक्षाबलों की आक्रामक रणनीति माओवादियों को लंबे समय तक कमजोर करने और क्षेत्र में स्थायी शांति बहाल करने के प्रयासों का हिस्सा है। पिछले कुछ वर्षों में DRG और केंद्रीय अर्धसैनिक बलों की संयुक्त कार्रवाई ने माओवादी गतिविधियों को काफी हद तक सीमित किया है। इस सफलता ने यह भी साबित किया है कि जंगल और दुर्गम इलाकों में संचालित नक्सलियों को रोकने के लिए समन्वित रणनीति और ठोस इन्टेलिजेंस बेहद जरूरी है। हाल के वर्षों में छत्तीसगढ़ के दक्षिणी बस्तर और इसके सीमावर्ती क्षेत्र नक्सलियों के लिए सुरक्षित ठिकानों के रूप में जाने जाते थे। यहां से वे बड़े हमलों की योजना बनाते और हथियार तथा युद्ध सामग्री इकट्ठा करते थे। लेकिन लगातार सुरक्षा अभियान और स्थानीय गुप्तचर नेटवर्क के सक्रिय सहयोग से सुरक्षाबलों ने इन ठिकानों पर सटीक कार्रवाई शुरू कर दी है। इस मुठभेड़ में भी यही रणनीति काम आई, जहां सटीक इंटेलिजेंस के दम पर नक्सलियों को घेरकर उन्हें मार गिराया गया।

सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि नक्सली संगठन आज भी पूरे बस्तर क्षेत्र में सक्रिय हैं और समय-समय पर हमला करने की योजना बनाते रहते हैं। ऐसे में DRG और अन्य सुरक्षाबलों की लगातार गश्त और निगरानी से ही क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। इस घटना ने यह भी साबित किया है कि आधुनिक हथियारों से लैस नक्सलियों को रोकने के लिए सिर्फ जमीन पर जवानों की उपस्थिति ही पर्याप्त नहीं, बल्कि सटीक जानकारी और रणनीतिक कार्रवाई भी आवश्यक है। इस मुठभेड़ के बाद प्रशासन ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया है कि उनकी सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्रभावित इलाकों में अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं और सभी संवेदनशील स्थानों पर गश्त बढ़ा दी गई है। ग्रामीणों से अपील की गई है कि वे किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तुरंत पुलिस या DRG को दें। कुल मिलाकर, सुकमा और बीजापुर में हुई यह मुठभेड़ न केवल नक्सलियों की गतिविधियों को कमजोर करने में महत्वपूर्ण साबित हुई है, बल्कि यह क्षेत्र में कानून और व्यवस्था बनाए रखने और शांति स्थापित करने के लिए सुरक्षाबलों के सतत प्रयासों का प्रतीक भी है।

दिल्ली दंगों के आरोपियों की जमानत पर सुप्रीम कोर्ट 5 जनवरी को फैसला सुनाएगा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट 5 जनवरी को दिल्ली दंगों की साजिश के आरोपी उमर खालिद, शरजील इमाम और अन्य की जमानत याचिकाओं पर अपना फैसला सुनाने जा रही है। इन आरोपियों पर 2020 दिल्ली दंगों का मास्टरमाइंड होने का आरोप है, जिसमें 53 लोगों की जान गई और 700 से अधिक घायल हुए थे। इस मामले में आरोपियों के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम यानी UAPA के तहत केस दर्ज हैं, जो आतंकवाद और गंभीर अपराधों के खिलाफ बनाया गया एक कड़ा कानून है।

दिल्ली हाई कोर्ट ने पहले ही इन आरोपियों को जमानत देने से इनकार कर दिया था। इसके बाद आरोपियों ने हाई कोर्ट के फैसले को सर्वोच्च अदालत में चुनौती दी। सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस अरविंद कुमार और एनवी अंजारिया की बेंच ने दिसंबर में लंबी दलीलें सुनने के बाद अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। अब 5 जनवरी को ही इस मामले में अंतिम आदेश जारी होने की संभावना है। सुप्रीम कोर्ट में इस मामले में पेश पक्षों ने अपनी दलीलें पूरी तरह से रख दी हैं। दिल्ली पुलिस की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने आरोपियों के खिलाफ पक्ष रखा, जबकि आरोपियों की ओर वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल, अभिषेक सिंघवी, सिद्धार्थ दवे, सलमान खुर्शीद और सिद्धार्थ लूथरा ने उनकी रक्षा की। दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद अदालत ने मामले पर विचार कर फैसला सुरक्षित कर लिया।

इस मामले की संवेदनशीलता और राजनीतिक गर्माहट ने इसे राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में बना दिया है। 2020 के नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (CAA) और राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) के विरोध प्रदर्शनों के दौरान दिल्ली में हुई हिंसा के लिए आरोपी ठहराए गए थे। अदालत में यह मामला इसलिए भी चर्चा में है क्योंकि यह न केवल कानून और न्याय के पक्ष को परखता है, बल्कि देश की संवैधानिक व्यवस्था और नागरिक सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

हाल ही में इस मामले में अंतरराष्ट्रीय विवाद भी सामने आया। न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी ने उमर खालिद को चिट्ठी लिखकर उनका हौसला बढ़ाया। इस चिट्ठी में उन्होंने लिखा कि प्रिय उमर, मैं कड़वाहट को अपने ऊपर हावी नहीं होने देने की आपकी बात को याद करता हूं और आपके परिवार से मिलकर मुझे खुशी हुई। इस पत्र के बाद देश में राजनीतिक बहस गर्म हो गई। भाजपा ने इसे भारत के आंतरिक मामलों में दखल के रूप में देखा और स्पष्ट कर दिया कि भारत अपनी संप्रभुता को चुनौती देने की किसी भी कोशिश को बर्दाश्त नहीं करेगा। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने कहा कि यदि देश की संप्रभुता पर कोई आघात होता है तो 140 करोड़ भारतीय प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एकजुट होकर उसका सामना करेंगे।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले की प्रतीक्षा इस लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल जमानत के अधिकारों से जुड़ा मामला है, बल्कि देश की न्यायिक प्रक्रिया और कानून के प्रति आम जनता के विश्वास पर भी असर डाल सकता है। अदालत के निर्णय से यह स्पष्ट होगा कि गंभीर आरोपों में लगे आरोपी किन शर्तों पर न्यायिक संरक्षण पा सकते हैं।

संपूर्ण मामले की गंभीरता और राजनीतिक संवेदनशीलता को देखते हुए सुरक्षा एजेंसियां पूरी तरह सतर्क हैं। दिल्ली पुलिस ने अदालत के आसपास सुरक्षा कड़ी कर दी है और किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया है। वहीं, देशभर में मीडिया और जनता भी फैसले के लिए सतर्क नजर बनाए हुए हैं।

इस फैसले का असर केवल आरोपियों पर नहीं पड़ेगा, बल्कि देश की कानून व्यवस्था, न्याय प्रणाली और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर भी होगा। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला न केवल दिल्ली दंगों की जांच और मामले की निष्पक्षता की कसौटी पर खरा उतरेगा, बल्कि देश की राजनीतिक और सामाजिक स्थिरता के लिहाज से भी अत्यंत अहम माना जा रहा है।

इस प्रकार, 5 जनवरी का दिन न सिर्फ उमर खालिद, शरजील इमाम और अन्य आरोपियों के लिए निर्णायक होगा, बल्कि यह पूरे देश की न्यायिक प्रक्रिया, कानून और सामाजिक व्यवस्था के लिए भी एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

आपकी हर याद को संजोएगा नया एआई स्मार्ट चश्मा: पिकल 1 के साथ भविष्य की तकनीक आपकी आंखों के सामने

(जीएनएस)। कैलिफोर्निया। तकनीकी दुनिया में एक बार फिर नई खोज ने सबको चौंका दिया है। अमेरिकी स्टार्टअप कंपनी ने हाल ही में पिकल 1 नामक एक अत्याधुनिक स्मार्ट चश्मा पेश किया है, जिसे खासतौर पर एआई तकनीक के साथ डिजाइन किया गया है। यह चश्मा न केवल देखने और सुनने की क्षमताओं को बढ़ाता है, बल्कि आपके द्वारा देखी और सुनी गई हर चीज को याद रखने की अद्भुत क्षमता रखता है। इसे पहनकर उपयोगकर्ता अपने जीवन के हर पल को डिजिटल रूप में सुरक्षित कर सकते हैं।

पिकल 1 की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें एआई सिस्टम के जरिए आपके आस-पास की गतिविधियों, बातचीत और अनुभवों को रिकॉर्ड किया जाता है। उदाहरण के लिए, अगर आप किसी मीटिंग में हैं, तो यह चश्मा बातों का संक्षिप्त सारांश तैयार कर सकता है, या किसी खरीदारी के दौरान आपके लिए उत्पादों की तुलना और सुझाव दे सकता है। यह केवल आपके व्यक्तिगत उपयोग के लिए ही नहीं, बल्कि पेशेवर और सामाजिक जीवन में भी मददगार साबित हो सकता है। इस चश्मे का वजन मात्र 68 ग्राम है, जो इसे लंबे समय तक पहनने के लिए आरामदायक बनाता है। इसमें फिंगरप्रिंट स्कैनर की सुविधा दी गई है, जो डिवाइस की सुरक्षा को बढ़ाता है और किसी अनधिकृत व्यक्ति के लिए इसे उपयोग करना मुश्किल बना देता है। बैटरी की क्षमता 12 घंटे तक है, जिससे पूरे दिन की गतिविधियों को बिना किसी रुकावट के रिकॉर्ड किया जा सकता है। पिकल 1 का उपयोग केवल याद रखने तक सीमित नहीं है। यह मैसेज पढ़ने, कॉल रिसीव करने, राइड बुक करने और ऑनलाइन शॉपिंग जैसे कामों में भी मदद करता है। उदाहरण के लिए, आप बस चश्मे को देखकर किसी टैक्सी या कैब बुक कर सकते हैं, या किसी ऑनलाइन स्टोर पर अपनी पसंद के उत्पादों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, यह स्वास्थ्य और फिटनेस के ट्रैकिंग में भी उपयोगी साबित हो सकता है, क्योंकि यह आपके चलने, दौड़ने और अन्य गतिविधियों को एआई की मदद से रिकॉर्ड करता है।

तकनीकी विशेषज्ञों का मानना है कि पिकल 1 जैसे एआई स्मार्ट डिवाइस हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में क्रांतिकारी बदलाव ला सकते हैं। पारंपरिक स्मार्टफोन या कंप्यूटर के मुकाबले, ऐसे डिवाइस सीधे आपके जीवन में शामिल होकर आपको हर पल की जानकारी और सुझाव तुरंत प्रदान कर सकते हैं। इससे न केवल समय की बचत होगी, बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रिया भी और आसान और सटीक हो जाएगी।

हालांकि, पिकल 1 की लॉन्चिंग के साथ ही डेटा प्राइवेसी और सुरक्षा के मुद्दे भी उठने लगे हैं। चश्मा आपके हर पल की जानकारी रिकॉर्ड करता है, जिससे व्यक्तिगत गोपनीयता के सवाल खड़े होते हैं। कंपनी का कहना है कि सभी डेटा को एन्क्रिप्टेड फॉर्म में रखा जाएगा और केवल उपयोगकर्ता की अनुमति से ही इसका उपयोग किया जाएगा। इसके बावजूद विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि ऐसे उपकरणों के व्यापक उपयोग से डिजिटल गोपनीयता पर असर पड़ सकता है।

सबरीमाला सोना चोरी मामले में सोनिया गांधी से मुलाकात पर भाजपा ने कांग्रेस से मांगा जवाब

(जीएनएस)। तिरुवनंतपुरम। सबरीमाला मंदिर से कथित रूप से निकाले गए सोने से जुड़े मामले में भाजपा ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया है कि मामले के मुख्य आरोपी उन्नीकृष्णन पोट्टी और गोवर्धन की सोनिया गांधी से मुलाकात संदिग्ध है और इसके लिए पार्टी को स्पष्टीकरण मिलना चाहिए। शुक्रवार को सामने आई तस्वीर में पोट्टी और गोवर्धन, जिन्हें सबरीमाला से कथित रूप से सोना चोरी करने का आरोप है, कांग्रेस नेता और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के साथ खड़े दिख रहे हैं। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के. सुरेंद्रन ने संवाददाता सम्मेलन में इस मुलाकात को लेकर सवाल उठाए। उन्होंने पूछा कि यूडीएफ के संयोजक अडूर प्रकाश और पथनमथिट्टा से सांसद एंटो एंटनी ने क्यों आरोपियों के साथ सोनिया गांधी से मुलाकात की। सुरेंद्रन ने कांग्रेस से स्पष्ट जवाब देने और मामले की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से कराने की मांग की। उनका कहना था कि यदि आरोपियों को किसी राजनीतिक संरक्षण या समर्थन मिल रहा है, तो यह गंभीर सवाल उठाता है और देशवासियों को इसका जवाब मिलना चाहिए। भाजपा ने इस घटना को लेकर जोर देकर कहा कि कानून के सामने सब बराबर हैं और किसी भी आरोपी को राजनीतिक संरक्षण के नाम पर छूट नहीं मिलनी चाहिए। पार्टी के अनुसार, मामले की निष्पक्ष और पारदर्शी जांच सुनिश्चित होनी चाहिए ताकि मंदिर और धार्मिक स्थल से जुड़े मामलों में कानून की अवमानना न हो।

सोनिया गांधी और कांग्रेस की ओर से इस संबंध में फिलहाल कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि इस मुलाकात की तस्वीर सार्वजनिक होने के बाद दोनों दलों के बीच सियासी टकराव बढ़ सकता है और आगामी समय में इसे चुनावी मुद्दे के रूप में भी उभारा जा सकता है।

सबरीमाला सोना चोरी मामला पहले ही कानूनी और धार्मिक विवादों में चर्चित है। इस मुलाकात के बाद भाजपा ने इसे और गंभीरता से उठाया है और केंद्रीय जांच एजेंसियों से जांच कराने की मांग को बल दिया है। इस मामले से जुड़े सभी पहलुओं की निष्पक्ष जांच ही मंदिर से जुड़े मामलों में जनता का विश्वास बनाए रखने का एकमात्र रास्ता बताया जा रहा है। राजनीतिक पंडितों के अनुसार, यह मामला केवल कानून और न्याय का नहीं है, बल्कि राजनीतिक संदेश भी देता है कि आरोपियों और राजनीतिक नेतृत्व के बीच किसी भी तरह के संपर्क को जनता और मीडिया नजरअंदाज नहीं करेंगे। आने वाले दिनों में इस मुलाकात को लेकर कांग्रेस से स्पष्टीकरण मिलने और सीबीआई जांच के आदेशों पर पूरा ध्यान रहेगा, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि आरोपियों और राजनीतिक नेतृत्व के बीच किसी भी प्रकार का अनुचित सम्बन्ध तो नहीं है।

संपादकीय

मौतें सबसे स्वच्छ शहर पर कलंक

यह शर्मनाक है कि जिस शहर को पिछले सात सालों से देश के सबसे स्वच्छ शहर का तमगा दिया जा रहा था, वहां पेयजल में सीवर का पानी मिल जाने से एक दर्जन से अधिक लोगों की मौत हो जाए। बताया जाता है कि इंदौर के भागीरथपुरा क्षेत्र में पेयजल आपूर्ति करने वाली पाइपलाइन में सीवर के पानी के रिसाव से हजारों लोगों का जीवन खतरे में पड़ गया। घटनाक्रम के बाद सौ के करीब लोग अस्पताल में भर्ती हुए और सैकड़ों लोग दूषित पेयजल के उपयोग से बीमार हैं। वैसे भी किसी सभ्य समाज में व्यक्ति आत्मग्लानि से यह सुनकर बीमार हो जाएगा कि जिस पानी को उसने उपयोग किया, उसमें सीवर का गंदा पानी मिला था। निस्संदेह, यह गंभीर प्रशासनिक लापरवाही ही है, जिसके चलते हजारों लोगों का जीवन संकट में पड़ गया। नगर निगम ही नहीं, इस महकमे से जुड़े सभी अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। दरअसल, इंदौर लगातार भारत के सबसे स्वच्छ शहर का दर्जा हासिल करता रहा है तो इस दुर्घटना ने पूरे प्रकरण को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मीडिया की सुर्खी बना दिया। इस दुखद स्थिति के चलते मानवाधिकार आयोग और मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय को हस्तक्षेप करने के लिये बाध्य होना पड़ा। विडंबना यह है कि नागरिकों ने पहले ही दूषित पेयजल आपूर्ति की शिकायत की थी, लेकिन नागरिकों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये जवाबदेह अधिकारी तब हरकत में आए, जब कई लोगों की जान जा चुकी थी। यहां तक कि इस निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि और राज्य के नगरीय विकास मंत्री, जिनके अधीन पेयजल आपूर्ति का महकमा आता है, उनकी संवेदनहीन बयानबाजी ने लोगों का आक्रोश बढ़ाया है। हालांकि, तल्ख आलोचना के बाद मंत्री ने खेद जताया है। यहां तक कि इस घटना के बाद मध्यप्रदेश की मुख्यमंत्री रह चुकी वरिष्ठ भाजपा नेत्री उमा भारती ने भी दोषियों से प्रायश्चित करने व दंड देने की मांग की है। लेकिन सवाल यह है कि क्या कुछ छोटे स्तर के अधिकारियों के निलंबन और स्थानांतरण से इन मौतों के लिये जिम्मेदार लोगों का प्रायश्चित हो पाएगा?

लेकिन विडंबना है कि यह समस्या केवल इंदौर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि देश के छोटे-बड़े शहरों में गाहे-बगाहे दूषित जल आपूर्ति के मामले प्रकाश में आते रहे हैं। दुर्घटना के बाद जांच समितियों का गठन, मुआवजे की घोषणा और कनिष्ठ अधिकारियों का निलंबन मामले में लीपापोती का उपक्रम बन चुका है। नववर्ष की पूर्व संध्या पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'सुधार, क्रियान्वयन और रूपांतरण' के मंत्र पर जोर दिया था। तब उन्होंने प्रक्रियाओं को सरल बनाने और जीवनयापन को सुगम बनाने के लिये प्रणालियों को अधिक अनुकूल बनाने की आवश्यकता पर भी बल दिया था। सवाल है कि जब नागरिकों को स्वच्छ हवा और जल जैसी बुनियादी आवश्यकताओं से वंचित रखा जाएगा तो जीवनयापन को सुगम कैसे बनाया जा सकता है? मध्य प्रदेश की दोहरे इंजन वाली सरकार इस मोर्चे पर पूरी तरह से विफल रही है। कोई भी बड़ी योजना व नारा तब तक अर्थहीन है जब तक उन्हें जमीनी स्तर पर ठोस कार्रवाई का समर्थन प्राप्त न हो। सर्वोच्च न्यायालय ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार अनुच्छेद-21 के तरह जीवन के मौलिक अधिकार का हिस्सा है। इंदौर की त्रासदी दर्शाती है कि शहरी बुनियादी ढांचे के खराब रखरखाव के कारण इस अधिकार का उल्लंघन कितनी आसानी से हो सकता है। निष्कर्ष यह भी है कि स्वच्छता रैंकिंग, स्मार्ट सिटी के दावे और शासन संबंधी नारे व्यवस्थागत नाकामी को छिपा नहीं सकते। इंदौर की घटना के बाद देश के सभी राज्यों में संबंधित विभागों व स्थानीय निकायों को पेयजल से जुड़ी व्यवस्था का ध्यान रखना होगा कि कहीं पेयजल आपूर्ति लाइन जर्जर होकर दूषित पानी से तो नहीं मिल रही है। पेयजल आपूर्ति करने वाली मुख्य पाइप लाइनों का नियमित रूप से अवलोकन होना चाहिए। इस बाबत मंत्रालय और निकाय के अधिकारियों की जवाबदेही तय होनी चाहिए। ऐसे गंभीर मामलों में लापरवाही के दोषियों को सख्त सजा देने का भी प्रावधान होना चाहिए। यह मामला गैर इरादतन हत्या जैसा भी तो है।

आस्था कोई भी हो मगर इंसान अच्छा हो

> यदि हिंदू हूं तो अच्छा हिंदू बनूं, मुसलमान हूं तो बेहतर मुसलमान बनूं, ईसाई हूं तो अच्छा ईसाई बनूं। और यह अच्छा होने का मतलब है अच्छा इंसान होना। अच्छा इंसान यानी वह जो अपनी आस्था में पूरा विश्वास रखने के बावजूद दूसरे की आस्था का भी सम्मान करें।

लगभग दो दशक पुरानी बात होगी। हमारे समय के एक महत्वपूर्ण संगीतकार खैयाम साहब के साथ कुछ समय बिताने का अवसर मिला था। दूरदर्शन पर एक कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग के बाद लौट रहे थे हम। उस कार्यक्रम में जो वे नहीं कह पाये थे, वही सब बता रहे थे वे। मेरी भूमिका तो सिर्फ श्रोता की थी। अचानक वह बोलते-बोलते रुक गये। कार की खिड़की से दायीं ओर देख रहे थे वे। उनके दोनों हाथ जुड़ गये थे। सिर झुक गया था उनका। मैंने देखा हमारी कार मुंबई के प्रसिद्ध सिद्धिविनायक मंदिर के सामने से गुजर रही थी। 'आपके धर्म में तो मूर्तिपूजा मना है,' मैंने अनायास ही जैसे उनसे पूछ लिया। वे मुस्कुराये, 'आदत है,' उन्होंने कहा। और फिर इसके बाद हम हिंदू-मुस्लिम संबंधों पर बात करने लग गये थे। आज जब मैं यह लिख रहा हूं, अचानक मुझे खैयाम की यह बात याद आ गयी। इसके साथ ही एक और बात भी याद आ रही है। मेरी बेटी कान्वेंट स्कूल में पढ़ी हुई है। स्कूल छोड़े उसे दशकों बीत गये। पर अब भी जब वह अपने बचपन के स्कूल के सामने से गुजरती है तो अनायास उसके हाथ 'क्रॉस' बनाने की मुद्रा में हरकत करने लगते हैं। और अपनी बात करूं– मंदिर, मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारे के सामने से गुजरते हुए मेरा सर भी, जैसे अपने आप झुक जाता है। और मैं यह भी जानता हूं कि पूजागृहों के प्रति यह रवैया सिर्फ खैयाम, मेरी बेटी, या मेरा ही नहीं है– हम जैसे न जाने कितने हैं जो ऐसा करते हैं। और यह सब अनायास हो जाता है। लेकिन कैसे? इस सवाल का जवाब तो यही है कि ऐसा करने के लिए किसी ने हमें कहा नहीं। मैंने अपनी बेटी से यह कभी नहीं कहा कि वह ऐसा किया करे। आप चाहें तो इसे संस्कारों

का परिणाम कह सकते हैं। यह तो संभव है कि मैंने बेटी से कभी यह कहा हो कि सब धर्म समान होते हैं, पर मुझे याद नहीं पड़ता मैंने कभी उसे समान मानने के लिए भी कहा हो। कम से कम मेरी तरफ से ऐसा कोई दबाव बच्चों पर नहीं डाला गया। मेरे माता-पिता ने भी कभी ऐसा कोई दबाव हम भाई-बहनों पर नहीं डाला।

Advertisement

उस दिन सिद्धिविनायक मंदिर के सामने से गुजरते हुए खैयाम साहब का अनजाने में ही सिर झुकाना भी किसी दबाव का परिणाम नहीं था। उन्होंने बताया था कि वे न जाने कब से ऐसा करते आ रहे हैं, और यह भी बताया था उन्होंने कि 'पूजागृह के सामने सिर झुकाता हूं तो ऐसा लगता है जैसे कोई आशीर्वाद का हाथ मेरे सिर पर धरा गया है।'

सच है, आशीर्वाद का यह अहसास मंदिर, मस्जिद, चर्च, या गुरुद्वारा, सब देते हैं। और सब धर्मों का आदर करना हमारी संस्कृति का हिस्सा है। सर्व धर्म समभाव की संस्कृति है हमारी। हमारा धर्म, यानी हिंदू धर्म, हमें यह सिखाता है कि चाहे ईश्वर कहें या खुदा, गॉड कहें या एक ओंकार, अलग-अलग रास्ते हो सकते हैं, पर पहुंचते सभी एक ही जगह हैं–पहुंचाते सभी एक ही जगह हैं हमें यह अलग-अलग रास्ते!

जैन धर्म का एक सिद्धांत है– अनेकांत वाद। यह विचार हमें समझाता है कि मैं सही हूं, पर तुम भी सही हो सकते हो। इतनी-सी बात यदि हम समझ लेते हैं तो फिर कोई विवाद बचता ही नहीं है। ईश्वर एक है फिर मेरा ईश्वर तुम्हारे ईश्वर से भिन्न या बेहतर कैसे हो सकता है? बस इतनी-सी बात समझने की आवश्यकता है कि हमारा अलग-अलग धर्म का होना एक संयोग मात्र है। मैं किसी एक धर्म में विश्वास करने वाले परिवार में पैदा हुआ इसमें मेरा कोई योगदान नहीं है। मेरे माता-पिता हिंदू थे, इसलिए मैं भी हिंदू हो गया, वे मुसलमान होते तो मैं आरती की जगह नमाज़ पढ़ रहा होता। इस संदर्भ में मेरी कोई भूमिका हो सकती है तो वह यही है कि यदि हिंदू हूं तो अच्छा हिंदू बनूं, मुसलमान हूं तो बेहतर मुसलमान बनूं, ईसाई हूं तो अच्छा ईसाई बनूं। और यह अच्छा होने का मतलब है अच्छा इंसान होना। अच्छा इंसान यानी वह जो अपनी आस्था में पूरा विश्वास रखने के बावजूद दूसरे की आस्था का भी सम्मान करें।

यहीं गड़बड़ हो रही है। हम अपनी आस्था की चिंता तो करते हैं पर दूसरे की आस्था को कुछ नहीं समझते। इसी का परिणाम है कि आज पंथ-निरपेक्षता में विश्वास करने वाले हमारे भारत में धर्म के नाम पर आये दिन झगड़े-फसाद होते रहते हैं। हमारा संविधान हर भारतीय को अपनी आस्था के अनुसार धार्मिक क्रिया-कलाप की स्वतंत्रता का अधिकार देता है। यही नहीं, हमारा संविधान हमें अपनी आस्था अपने धर्म के प्रचार-प्रसार का भी अधिकार देता है। शर्त सिर्फ यह है कि कोई नागरिक अपने अधिकार की सीमाओं को न लांघे। ये सीमाएं भी परिभाषित हैं हमारे संविधान में– सब नागरिक समान हैं, कोई नागरिक किसी दूसरे को अपने धर्म की ओर आकृष्ट करने के लिए किसी प्रकार का लालच अथवा दबाव काम में नहीं ले सकता। पर अक्सर हम अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर जाते हैं–और इसके लिए दोषी दूसरे को ठहराते हैं। धर्म के नाम पर आज जो गड़बड़ियां हो रही हैं, वे इसी अतिक्रमण का परिणाम हैं।

ऐसे ही अतिक्रमण का उदाहरण इस बार क्रिसमस के अवसर पर दिखा। देश के अलग-अलग हिस्सों में चर्चों पर, ईसाइयों पर दुर्भाग्यपूर्ण प्रतिक्रिया हुई। दंगा करने वाले को यह भी स्वीकार नहीं था कि सांताक्लाज की टोपियां बेचकर कोई अपना पेट भरने के लिए कुछ कमा ले। हद तो यह भी हुई कि चर्चों के सामने जाकर हनुमान चालीसा का पाठ किया गया! क्रिसमस के आयोजनों के संदर्भ में हुए विवाद और झगड़े हैरान भी करते हैं और दुखी भी। एक ओर तो हमारे प्रधानमंत्री क्रिसमस के अवसर पर चर्च में जाकर ईसाइयों की पूजा-अर्चना में भाग लेते हैं, धार्मिक भाईचारे का संदेश देने का प्रयास करते हैं, और दूसरी ओर कुछ कथित धार्मिक संगठन क्रिसमस के रंग में भंग डालने का खुलेआम अपराध करते हैं। ऐसे कुकृत्य के कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए हैं, जिन्हें देखकर हर विवेकशील नागरिक को शर्म आ जाये। शर्म आनी चाहिए कहना, ज़्यादा सही होगा।

हमारा भारत, बहुधर्मी है, बहु जातीय और बहुभाषी भी। यह विविधता हमारी विशेषता ही नहीं, हमारी ताकत भी है। इस विविधता पर अभिमान होना चाहिए हमें। पर धर्म के नाम पर जिस तरह एक-दूसरे को नीचा दिखाने या कम भारतीय समझने की गतिविधियां हो रही हैं, उन्हें देखकर सिर्फ यही कहा जा सकता है कि 'हे ईश्वर, ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं, इन्हें क्षमा कर देना'।

ईश्वर तो क्षमा कर भी देगा, पर हमारी अपनी चेतना जब तक हमें बेहतर मनुष्य बनने के लिए प्रेरित नहीं करेगी, हम सही अर्थों में इंसान नहीं बन सकते। अब हमें तय करना होगा कि हम बेहतर इंसान बनना चाहते हैं या नहीं।

प्रेरणा

आत्मदीप का प्रकाश और मन की शांति

कहानी एक राजा की है, लेकिन उसका अर्थ हर उस मनुष्य से जुड़ा है जो बाहर उजाले की तलाश में भीतर के अंधकार को भूल बैठता है। प्रतापी राजा, जिसके महल सोने-चांदी की रोशनी से चमकते थे, एक दिन शिकार के दौरान घने जंगल में भटक गया। चारों ओर अंधकार था, रास्ते अनजान थे और मन में भय का साया गहराने लगा था। वही राजा, जो हजारों दीपकों की रोशनी में बैठकर न्याय करता था, आज जंगल के अंधेरे में खुद को असहाय महसूस कर रहा था। तभी उसे एक गुफा दिखाई दी। गुफा के भीतर एक सिद्ध महात्मा ध्यान में लीन थे। न वहां दीपक था, न मशाल, फिर भी उनके चेहरे पर अद्भुत शांति का उजाला था।

राजा को यह दृश्य अचंभित कर गया। उसने पूछा कि इस अंधकार में बिना किसी प्रकाश के वे कैसे बैठे हैं। महात्मा का उत्तर साधारण था, लेकिन अर्थ में गहरा। उन्होंने कहा कि बाहर का दीपक केवल दीवारें दिखाता है, भीतर का दीपक पूरा ब्रह्मांड दिखा देता है। यही से कहानी दर्शन बन जाती है। राजा, जो जीवन भर बाहरी उपलब्धियों को ही सब कुछ मानता रहा था, पहली बार भीतर की ओर देखने को मजबूर हुआ। उसके मन में सवाल उठा कि वह कौन सा दीपक है जो बाहर नहीं, भीतर जलता है।

महात्मा ने इच्छाओं के तेल और संतोष की बाती की बात की। यह कोई साधारण उपमा नहीं थी। इच्छाएं ही वह तेल हैं जो मनुष्य के मन को लगातार जलाती रहती हैं। जितनी इच्छाएं बढ़ती हैं, उतनी ही बेचैनी बढ़ती है। राजा के पास सब कुछ था, फिर भी उसका मन अशांत रहता था। उसे हमेशा किसी न किसी चीज़ की कमी महसूस होती थी। कभी और बड़ा राज्य चाहिए, कभी और अधिक सम्मान, कभी और ज्यादा वैभव। महात्मा ने उसे समझाया कि इच्छाओं का तेल कभी खत्म नहीं होता, लेकिन अगर मनुष्य स्वयं उसे खत्म करने का निर्णय कर ले, तो भीतर एक नई रोशनी जन्म लेती है।

यह रोशनी किसी दीपक या मोमबत्ती की नहीं होती। यह संतोष की रोशनी होती है। संतोष का अर्थ अभाव नहीं है, बल्कि जो है उसमें पूर्णता का अनुभव करना है। राजा ने पहली बार सोचा कि क्या उसने कभी संतोष का अनुभव किया है। उसके महल में हजारों दीपक जलते थे, लेकिन मन में अंधेरा था। यहां जंगल की गुफा में एक भी दीपक नहीं था, फिर भी शांति का उजाला फैला हुआ था।

महात्मा ने बताया कि जब मनुष्य दूसरों से तुलना करना छोड़ देता है, जब वह अपने अहंकार को शांत कर देता है, तब मन की आंखें खुलती हैं। बाहर की आंखें सीमित देखती हैं, लेकिन भीतर की आंखें असीमित। राजा को लगा जैसे वर्षों से बंद कोई द्वार धीरे-धीरे खुल रहा हो। उसे समझ में आया कि सत्ता, धन और वैभव केवल साधन हैं, लक्ष्य नहीं। लक्ष्य तो मन की शांति है, और वही वास्तविक उजाला है। आज का मनुष्य भी उसी राजा की तरह है। शहरों की रोशनी में जीता हुआ, मोबाइल स्क्रीन की चमक में डूबा हुआ, लेकिन भीतर से थका हुआ और खाली। हम सोचते हैं कि ज्यादा पैसा, बड़ा घर, ऊंचा पद हमें शांति देगा, लेकिन जैसे-जैसे ये चीजें मिलती जाती हैं, वैसे-वैसे बेचैनी भी बढ़ती जाती है। मनुष्य भूल जाता है कि बाहर का उजाला आंखों को चकाचौंध तो दे सकता है, लेकिन मन को शांति नहीं दे सकता।

मन की शांति तब आती है जब मनुष्य स्वयं से संवाद करता है। जब वह अपने भीतर झांकने का साहस करता है। जब वह स्वीकार करता है कि हर इच्छा पूरी होना आवश्यक नहीं है। महात्मा की बात आज के समय में और भी प्रासंगिक हो जाती है, क्योंकि आज इच्छाओं का तेल अनंत हो गया है। विज्ञापन, सोशल मीडिया और दिखावे की दुनिया लगातार हमें यह एहसास दिलाती रहती है कि हमारे पास जो है, वह पर्याप्त नहीं है। इसी कमी की भावना में मनुष्य जलता रहता है।

राजा के लिए वह गुफा केवल एक स्थान नहीं थी, वह एक बोधस्थल थी। वहां उसे यह समझ आया कि वास्तविक शक्ति तलवार या सेना में नहीं, बल्कि स्वयं पर नियंत्रण में है। जो व्यक्ति अपने मन को जीत लेता है, वह पूरी दुनिया को जीतने की क्षमता रखता है। मन की शांति कोई उपहार नहीं है, जिसे कोई दूसरा दे सके। यह एक साधना है, जो भीतर से शुरू होती है।

महात्मा ने यह भी कहा था कि ज्ञान का प्रकाश वह है जिसे कोई हवा नहीं बुझा सकती। बाहर के दीपक को हवा बुझा देती है, समय बुझा देता है, परिस्थितियां बुझा देती हैं। लेकिन भीतर का दीपक परिस्थितियों से परे होता है। दुख आए या सुख, हार आए या जीत, वह प्रकाश बना रहता है। यही कारण है कि सच्चे संत साधारण परिस्थितियों में भी आनंदित रहते हैं, जबकि साधनों से घिरे लोग भी दुखी रहते हैं।

राजा जब जंगल से लौटा, तो वही राजा नहीं रहा। महल वही था, सिंहासन वही था, लेकिन दृष्टि बदल चुकी थी। अब वह निर्णय करते समय केवल सत्ता नहीं, बल्कि संतुलन भी देखता था। अब उसके लिए प्रजा केवल आंकड़े नहीं, बल्कि संवेदनाएं थीं। उसने समझ लिया था कि शांति का उजाला बाहर से भीतर नहीं आता, बल्कि भीतर से बाहर फैलता है।

यह कथा हमें भी यही सिखाती है कि जीवन में थोड़ा ठहरना जरूरी है। इच्छाओं की दौड़ में रुककर यह देखना जरूरी है कि हम कहां जा रहे हैं। अगर मन अशांत है, तो सारे दीपक व्यर्थ हैं। लेकिन अगर मन शांत है, तो अंधेरे में भी रास्ता दिखने लगता है। मन की शांति ही वह उजाला है, जो जीवन को अर्थ देता है, और उसी उजाले में मनुष्य स्वयं को, दूसरों को और पूरे ब्रह्मांड को सही अर्थों में देख पाता है।

हंसी के पीछे छिपा डर और दांतों की सच्चाई

कड़ाके की ठंड में जब आम आदमी अलाव के पास सिमट कर बैठा है, तब कुछ चेहरे ऐसे भी हैं जिनकी हंसी ठिठुरन से नहीं, बल्कि बेखौफ बेशर्मी से निकल रही है। शीतलहर के इस मौसम में दांत किटकिटाना स्वाभाविक है, लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जिनके दांत ठंड से नहीं, बल्कि अहंकार से बजते हैं। और जब वही अहंकार डगमगाने लगता है, जब सवाल उठने लगते हैं, जब शिकंजा कसने की आहट सुनाई देती है, तब वही दांत किटकिटाने की बजाय निपोरने लगते हैं। यह दृश्य नया नहीं है, बस चेहरे बदल जाते हैं, नाम बदल जाते हैं, लेकिन चरित्र वही रहता है। ललित मोदी और विजय माल्या इस चरित्र के ताज़ा उदाहरण भर हैं।

कुछ समय पहले तक इन दोनों के चेहरों पर जो मुस्कान थी, वह किसी मासूम खुशी की मुस्कान नहीं थी। वह मुस्कान थी चुनौती की, वह मुस्कान थी तंज की, वह मुस्कान थी पूरे भारतीय तंत्र को अंगूठा दिखाने की। कैमरे के सामने, सोशल मीडिया पर, पॉडकास्ट और पार्टियों में उन्होंने जिस तरह से अपने आप को पेश किया, वह सिर्फ व्यक्तिगत बेशर्मी नहीं थी, बल्कि एक राष्ट्र के सामने खुली उद्दंडता थी। वे हंस रहे थे, लेकिन वह हंसी किसी मनोरंजन की वजह से नहीं थी, वह हंसी इस बात की थी कि "देखो, हम तुम्हें लूटकर भी आज़ाद हैं।" वे हंसे थे इस बात पर कि जिस देश में करोड़ों लोग ईमानदारी से दिन-रात मेहनत करते हैं, उसी देश में कुछ लोग सिस्टम की नसों में ज़हर घोलकर अरबों का कर्ज ले सकते हैं और फिर बिना किसी डर के विदेश भाग सकते हैं। वे हंसे थे इस बात पर कि जिन बैंकों को आम आदमी अपनी गाढ़ी कमाई सौंपता है, उन्हीं बैंकों को लूटकर भी कोई व्यक्ति कानून की पकड़ से बाहर रह सकता है। वे हंसे थे अदालतों की सुस्त चाल पर, जांच एजेंसियों की सीमाओं पर और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमजोरी पर। यह हंसी सिर्फ व्यक्तियों की नहीं थी, यह उस पूरे तंत्र पर व्यंग्य थी जो बार-बार दावा करता है कि कानून सबके लिए समान है। जब ललित मोदी यह कहते हैं कि वे भारत लौटने से क्यों डरें, जब विजय माल्या खुलेआम यह जताते हैं कि उन्हें भगोड़ा कहना गलत है, तब वे सिर्फ अपनी सफाई नहीं दे रहे होते, वे उस व्यवस्था को आईना दिखा रहे होते हैं जिसने उन्हें यह आत्मविश्वास दिया। यह आत्मविश्वास यूं ही पैदा नहीं होता। इसके पीछे वर्षों का संरक्षण, अनदेखी और मिलीभगत छिपी होती है।

वे हंसे थे राजनीतिक गलियारों में मिलने वाले उस मौन समर्थन पर, जो भले ही सार्वजनिक रूप से न दिखे, लेकिन जरूरत पड़ने पर ढाल बनकर सामने आ जाता है। वे हंसे थे नौकरशाही की उस लचीली रीढ़ पर, जो ताकतवरों के सामने झुक जाती है। वे हंसे थे उस न्यायिक प्रक्रिया पर, जो तारीख पर तारीख देती है और आखिरकार इंसाफ थककर बैठ जाता है। उनकी हंसी में यह भरोसा झलकता था कि चाहे कुछ भी हो जाए, सिस्टम अंततः उनके ही पक्ष में झुकेगा।

लेकिन कहानी का यह हिस्सा यहीं खत्म नहीं होता। क्योंकि हर हंसी के पीछे एक डर भी छिपा होता है। जैसे ही हवा का रुख बदलता है, जैसे ही अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ता है, जैसे ही राजनीतिक समीकरण बदलते हैं, वैसे ही वही बेशर्म मुस्कान सिकुड़ने लगती है। दांत जो पहले फाड़कर दिखाए जा रहे थे, वही अब होंठों के पीछे छिपने लगते हैं। यह दांत निपोरने का दौर होता है, जहां व्यक्ति बचाव की मुद्रा में आ जाता है।

अचानक तबीयत खराब होने लगती है। अचानक मानवीय अधिकारों की याद आने लगती है। अचानक न्याय और निष्पक्षता की दुहाई दी जाने लगती है। अदालतों में अर्जियां लगती हैं, वकीलों की फौज खड़ी होती है और मीडिया के सामने यह नैरेटिव गढ़ा जाता है कि हम तो पीड़ित हैं। यही वह क्षण होता है जब बेशर्मी का खोल उतरने लगता है और डर की परत दिखाई देने लगती है। यह डर सिर्फ जेल जाने का नहीं होता, यह डर उस ऐश के खत्म होने का होता है, उस बेफिक्री के टूटने का होता है, जिसे उन्होंने वर्षों से पाल रखा था।

असल सवाल यह नहीं है कि ललित मोदी या विजय माल्या हंसे या नहीं हंसे। असल सवाल यह है कि उन्हें हंसने का मौका किसने दिया। किसने ऐसा माहौल बनाया कि देश की संपत्ति लूटने के बाद भी कोई व्यक्ति खुलेआम ठहाके लगा सके। किसने ऐसा सिस्टम खड़ा किया जहां मेहनतकश जनता खामोशी से सब सहती रहे और लुटेरे विदेशों में शैंपेन के जाम उठाते रहें। यह सवाल आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कल था। उनकी हंसी में एक और संदेश भी छिपा था। वह संदेश यह था कि ईमानदारी इस देश में सबसे बड़ी मूर्खता है। कि नियमों का पालन करना घाटे का सौदा है। कि चालाकी, धूर्तता और बेईमानी ही सफलता की कुंजी है। जब ऐसे संदेश बार-बार सामने आते हैं, तो समाज का नैतिक ढांचा कमजोर होता है। युवा पीढ़ी के मन में यह सवाल उठता है कि अगर लूटकर भाग जाना ही सबसे सुरक्षित रास्ता है, तो फिर ईमानदारी का क्या अर्थ रह जाता है।

लेकिन इतिहास गवाह है कि हर ठसक की एक सीमा होती है। हर बेशर्मी का एक अंत होता है। और हर हंसी के बाद एक खामोशी भी आती है। आज भले ही ये चेहरे विदेशों में सुरक्षित महसूस कर रहे हों, लेकिन सच यह है कि उनकी यह सुरक्षा स्थायी नहीं है। अंतरराष्ट्रीय कानून, बदलती राजनीति और जनता का दबाव धीरे-धीरे उन दरवाजों को बंद करता है, जिनसे वे कभी बड़ी आसानी से निकल गए थे।

दांत किटकिटाने और दांत निपोरने की यह कहानी सिर्फ दो नामों की नहीं है। यह उस पूरे तंत्र की कहानी है जो कभी लुटेरों को सिर पर बिठाता है और फिर मजबूरी में उनसे दूरी बनाने लगता है। यह कहानी चेतावनी है कि अगर व्यवस्था ने समय रहते खुद को नहीं सुधारा, तो ऐसे चेहरे बार-बार पैदा होंगे। और हर बार वे हंसेंगे, देश पर, कानून पर और जनता की मजबूरी पर।

अंततः सवाल यही है कि क्या यह देश सिर्फ दांत फाड़कर हंसने वालों का रहेगा या फिर उन करोड़ों लोगों का भी, जो चुपचाप दांत किटकिटाते हुए ठंड, महंगाई और अन्याय सहते हैं। अगर जवाब बदलना है, तो सिर्फ चेहरों को नहीं, सिस्टम को बदलना होगा। वरना हर शीतलहर में कुछ लोग अलाव के पास ठिठुरेंगे और कुछ लोग दूर देशों में बैठकर ठहाके लगाते रहेंगे, जब तक कि उनकी हंसी एक दिन खुद उनके गले में अटक न जाए।

अभियान

संगम की रेती पर आस्था का महासंगीत: पौष पूर्णिमा से माघ मेले का भव्य शुभारंभ

पौष पूर्णिमा के पावन अवसर के साथ ही प्रयागराज की संगम भूमि एक बार फिर आस्था, तप और परंपरा के विराट रंग में रंग गई। शनिवार से त्रिवेणी संगम की रेती पर माघ मेले का औपचारिक आरंभ हो गया, और इसके साथ ही श्रद्धा का वह सिलसिला शुरू हुआ, जो पूरे एक माह तक निरंतर चलता रहेगा। कड़ाके की ठंड, शीतलहर और गलन के बावजूद श्रद्धालुओं के उत्साह में कोई कमी नहीं दिखी। तड़के सुबह से ही बच्चे, बूढ़े, महिलाएं और युवा गंगा और संगम की ओर बढ़ते दिखाई दिए। ठिठुरते हाथों में पूजा की थाली, होठों पर मंत्रोच्चार और आंखों में आस्था की चमक लिए लाखों लोग संगम में डुबकी लगाने पहुंचे।

माघ मेला भारतीय सनातन परंपरा का ऐसा उत्सव है, जहां धर्म केवल कर्मकांड तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवनशैली बन जाता है। पौष पूर्णिमा का स्नान माघ मेले का प्रथम और अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन संगम में स्नान करने से व्यक्ति के पाप कटते हैं और पुण्य की प्राप्ति होती है। यही कारण है कि भीषण ठंड के बावजूद श्रद्धालु घंटों कतार में खड़े रहकर अपनी बारी का इंतजार करते रहे। जैसे ही सूर्य की पहली किरण गंगा की लहरों पर पड़ी, पूरा संगम क्षेत्र जय गंगा मैया और हर हर गंगे के उद्घोष से गूंज उठा।

इस स्नान पर्व के साथ ही एक माह तक चलने वाले कल्पवास की भी शुरुआत हो गई। कल्पवास वह साधना है, जिसमें श्रद्धालु सांसारिक जीवन से विरक्त होकर संयम, तप और भक्ति के मार्ग पर चलता है। त्रिवेणी संगम आरती सेवा समिति के अध्यक्ष आचार्य राजेंद्र मिश्र के अनुसार, इस वर्ष माघ मेले में लगभग पांच लाख कल्पवासियों के कल्पवास प्रारंभ होने का अनुमान है। कल्पवासी कठोर नियमों का पालन करते हुए संगम तट पर निवास करते हैं। वे दिन में दो बार गंगा स्नान करते हैं, एक पहर सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं और शेष समय ईश्वर के ध्यान, जप, तप और पूजन में बिताते हैं। यह जीवनशैली व्यक्ति को भीतर से शुद्ध करने और आत्मबोध की ओर ले जाने वाली मानी जाती है।

पौष पूर्णिमा का स्नान पूरे दिन भर चलता है। मेला प्रशासन के अनुसार, सुबह दस बजे तक ही लगभग नौ लाख श्रद्धालु गंगा और संगम में स्नान कर चुके थे। प्रयाग धाम संघ के अध्यक्ष राजेंद्र पालीवाल ने बताया कि शाम तक यह संख्या बीस लाख के करीब पहुंच सकती है। उन्होंने कहा कि पौष पूर्णिमा का स्नान मुहूर्त शाम चार बजे तक रहेगा, जिसके चलते पूरे दिन संगम क्षेत्र में श्रद्धालुओं की भारी आवाजाही बनी रहेगी। प्रशासन ने भी इस संभावना को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त इंतजाम किए हैं।

कल्पवासी पौष पूर्णिमा के स्नान के बाद अपने-अपने पुरोहितों से एक माह के कल्पवास का विधिवत संकल्प लेते हैं। इस संकल्प में वे संयमित जीवन जीने, नियमों का पालन करने और सांसारिक आकर्षणों से दूर रहने का व्रत लेते हैं। इसके बाद वे पूरे माघ महीने तक संगम तट पर ही निवास करते हैं। यह परंपरा न केवल धार्मिक है, बल्कि मानसिक और आत्मिक अनुशासन की भी प्रतीक है।

प्रयागराज की मंडलायुक्त सौम्या अग्रवाल के अनुसार, पौष पूर्णिमा के अवसर पर 20 से 30 लाख श्रद्धालुओं के संगम में स्नान करने की उम्मीद है। श्रद्धालुओं की इस भारी भीड़ को सुव्यवस्थित ढंग से संभालने के लिए मेला प्रशासन ने व्यापक तैयारियां की हैं। माघ मेला क्षेत्र में लगभग 10,000 फुट के दायरे में 10 स्नान घाट बनाए गए हैं, ताकि श्रद्धालुओं को सुरक्षित और सुगम स्नान की सुविधा मिल सके। इसके अलावा संगम क्षेत्र और मेला परिसर को जोड़ने के लिए नौ पांटून पुल बनाए गए हैं, जिससे आवागमन सुचारू बना रहे। इस वर्ष माघ मेले की एक विशेष पहचान कल्पवासियों के लिए बसाया गया नया नगर है। एडीएम (माघ मेला) दयानंद प्रसाद ने बताया कि पहली बार माघ मेला क्षेत्र में कल्पवासियों के लिए अलग से एक सुव्यवस्थित नगर विकसित किया गया है, जिसे 'प्रयागवाल' नाम दिया गया है। 950 बीघा क्षेत्र में बसे इस नगर को नागवासुकी मंदिर के सामने गंगा नदी के पार स्थापित किया गया है। यहां कल्पवासियों के लिए आवास, पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाएं और सुरक्षा से जुड़ी सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। यह पहल कल्पवासियों के लिए माघ मेले को और अधिक सुविधाजनक और सुरक्षित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। माघ मेले में श्रद्धालुओं की विविधता भी देखने को मिल रही है। देश के अलग-अलग हिस्सों से लोग यहां संगम स्नान के लिए पहुंचे हैं। कोलकाता से सपरिवार आईं पूजा झा ने कहा कि माघ मेले में आकर उन्हें अद्भुत शांति का अनुभव हो रहा है। उन्होंने बताया कि संगम में स्नान करना उनके लिए केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक भावनात्मक अनुभव भी है। वहीं मध्य प्रदेश के रीवा से लड्डू गोपाल को लेकर आईं शिवानी मिश्रा ने कहा कि वह महाकुंभ में तीन बार स्नान कर चुकी हैं, लेकिन माघ मेले में अपेक्षाकृत कम भीड़ होने के कारण यहां उन्हें अधिक सुकून मिला। उन्होंने कहा कि माघ मेला उन्हें ईश्वर के और करीब ले आता है।

माघ मेला केवल स्नान पर्व तक सीमित नहीं है। यह एक जीवंत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयोजन है। मेले में साधु-संतों के प्रवचन, धर्मसभाएं, यज्ञ, हवन, कथा और भजन-कीर्तन का आयोजन होता है। संगम तट पर सुबह से रात तक आध्यात्मिक गतिविधियां चलती रहती हैं। कल्पवासी अपने तंबुओं में साधना करते हैं और संतों के सान्निध्य में जीवन के गूढ़ प्रश्नों पर चिंतन करते हैं। ठंड में जलती धूनी, तंबुओं के बीच गूंजते मंत्र और गंगा की लहरों की कलकल ध्वनि पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर देती है। सुरक्षा और व्यवस्था के लिहाज से भी मेला प्रशासन सतर्क है। स्नान घाटों पर जल पुलिस और गोताखोरों की तैनाती की गई है। भीड़ प्रबंधन के लिए सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जा रही है। स्वच्छता बनाए रखने के लिए बड़ी संख्या में सफाई कर्मियों को तैनात किया गया है। स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अस्थायी अस्पताल और चिकित्सा शिविर भी लगाए गए हैं, ताकि किसी भी आपात स्थिति से निपटा जा सके।

माघ मेला 2026 के दौरान कई प्रमुख स्नान पर्व आयोजित होंगे, जिनमें पौष पूर्णिमा के बाद मकर संक्रांति (14 जनवरी), मौनी अमावस्या (18 जनवरी), बसंत पंचमी (23 जनवरी), माघी पूर्णिमा (एक फरवरी) और महाशिवरात्रि (15 फरवरी) प्रमुख हैं। इन तिथियों पर श्रद्धालुओं की संख्या कई गुना बढ़ने की संभावना है। प्रशासन ने इन पर्वों को ध्यान में रखते हुए यातायात, सुरक्षा और सुविधाओं को और मजबूत करने की योजना बनाई है। सदियों पुरानी माघ मेले की परंपरा आज भी उतनी ही जीवंत और प्रभावशाली है। यह मेला केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की सामूहिक चेतना का प्रतीक है। पौष पूर्णिमा से आरंभ हुआ यह मेला आने वाले दिनों में आस्था, तप, साधना और सामाजिक समरसता का विराट स्वरूप प्रस्तुत करेगा। संगम की रेती पर बसा यह अस्थायी संसार श्रद्धालुओं के लिए केवल एक मेला नहीं, बल्कि जीवन को भीतर से बदल देने वाला आध्यात्मिक अनुभव बनकर उभर रहा है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने केन्द्र प्रायोजित 10 प्रमुख स्वास्थ्य योजनाओं की सर्वग्राही समीक्षा की

▸▸2026 के अंत तक राज्य में पाँच मेडिकल कॉलेजों तथा अस्पतालों का निर्माण कार्य पूर्ण होने जाने से राज्य के नागरिकों को अधिक सुदृढ़ स्वास्थ्य सेवाएँ आसानी से उपलब्ध हो सकेंगी

▸▸मुख्यमंत्री का आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना-मा का पारदर्शी, तेज तथा एआई आधारित टेक्नोलॉजी से क्रियान्वयन करने का सुझाव

▸▸प्रधानमंत्री का ग्रामीण स्तर तक होलिस्टिक हेल्थकेयर का दृष्टिकोण गुजरात में 7733 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर द्वारा साकार हो रहा है

▸▸मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट मिशन तथा प्रधानमंत्री मातृवंदना आदि योजनाओं का व्यापक लाभ ग्रामीण-तहसील स्तर पर अधिक लोगों को मुहैया कराने के लिए वर्तमान व्यवस्थाएँ सुदृढ़ करने का मार्गदर्शन दिया

(जीएनएस)। गांधीनगर, 03 जनवरी : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को गांधीनगर में उच्च स्तरीय बैठक आयोजित कर राज्य के सुदूरवर्ती तथा अंतिम छोर के ग्रामीण क्षेत्रों एवं तहसीलों तक लागू स्वास्थ्य सुख-सुविधा से जुड़ी योजनाओं की वर्तमान स्थिति की सर्वग्राही समीक्षा की। श्री पटेल ने बैठक में कहा कि राज्य में राजपीपळा, मोरबी, नवसारी, गोधरा तथा पोरबंदर; इन पाँच मेडिकल कॉलेजों, अस्पतालों तथा हॉस्टलों का निर्माण कार्य वर्ष 2026 के दिसंबर माह तक पूरा हो जाएगा। इसके फलस्वरूप सुदूरवर्ती-अंतिम छोर के आदिवासी क्षेत्रों के गाँवों तथा सौराष्ट्र के दूरदराजी गाँवों के लोगों को निकटस्थ स्थान पर ही सुदृढ़ स्वास्थ्य सेवाएँ आसानी से उपलब्ध होंगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हेल्थकेयर फॉर ऑल का जन स्वास्थ्योन्मुखी दृष्टिकोण अपनाकर जो महत्वपूर्ण केन्द्र प्रायोजित योजनाएँ शुरू कराई हैं, उनकी प्रगति पर बैठक में विस्तृत विचार-विमर्श करते हुए मुख्यमंत्री ने आवश्यक दिशानिर्देश दिए।

विशेषकर ग्रामीण स्तर तक आयुर्वेदिक तथा होम्योपैथिक उपचार पद्धति सहित जन स्वास्थ्य सुख-सुविधा के लिए होलिस्टिक हेल्थकेयर का प्रधानमंत्री दृष्टिकोण गुजरात में 7733 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर के व्यापक नेटवर्क से साकार हो रहा है। बैठक में इसका भी विवरण दिया गया।

मुख्यमंत्री ने इस संदर्भ में प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ डेवलपमेंट मिशन अंतर्गत राज्य में 410 अर्बन हेल्थ सेंटर्स, 33 जिलों में आधुनिक लैब्स तथा 32 जिलों में क्रिटिकल केयर ब्लॉक्स के निर्माण की

प्रगति की जानकारी प्राप्त कर यह सुनिश्चित करने के दिशानिर्देश दिए कि ये कार्य समयसीमा पर पूर्ण हों। इसके अलावा; स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव ने बैठक में यह जानकारी भी दी कि ग्रामीण क्षेत्रों में 302 सब सेंटर्स तथा 23 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के नए भवनों का निर्माण भी पूरा हो गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सुझाव दिया कि आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना-मा का राज्य में पारदर्शी, तेज एवं एआई आधारित टेक्नोलॉजी से अधिक पुख्ता ढंग से और व्यवस्थित क्रियान्वयन हो।

बैठक में प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना में राज्य की 3.44 लाख से अधिक माताओं को पोषण सहायता, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना – मा अंतर्गत 2.69 करोड़ सदस्यों का पंजीकरण और 10 लाख रुपए तक के कैशलेस उपचार की उपलब्धता के बारे में भी विवेचना की गई।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री की हर कल्याणकारी योजना के क्रियान्वयन में गुजरात अग्रसर है। उन्होंने इसी परंपरा के अनुसार केन्द्र प्रायोजित प्रमुख 10 स्वास्थ्य योजनाओं के श्रेष्ठ क्रियान्वयन में भी गुजात को अग्रसर रखकर स्वस्थ गुजरात का संकल्प साकार करने का अनुरोध किया।

इस समीक्षा बैठक में स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री राजीव टोपनो, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, स्वास्थ्य आयुक्त (ग्रामीण व शहरी) श्री हर्षद पटेल तथा डॉ. रतनकँवर गढवीचारण, अपर स्वास्थ्य निदेशक एवं वरिष्ठ अधिकारी सहभागी हुए।

तीन महीने की जेल से शुरू हुआ खौफ का साम्राज्य, रोहित गोदारा कैसे बन गया राजस्थान का मोस्ट वांटेड गैंगस्टर

(जीएनएस)। जयपुर। राजस्थान की आपराधिक दुनिया में इन दिनों जिस नाम से सबसे ज्यादा दहशत फैल रही है, वह है रावत दास उर्फ रोहित गोदारा। कभी मोबाइल रिपेयरिंग सिखाने वाला साधारण युवक आज रंगदारी, धमकी और अंतरराष्ट्रीय गैंग नेटवर्क का चेहरा बन चुका है। राजधानी जयपुर में एक खनन कारोबारी से पांच करोड़ रुपये की रंगदारी मांगने का ताजा मामला सामने आने के बाद एक बार फिर रोहित गोदारा चर्चा के केंद्र में है। व्हाट्सएप कॉल और वॉइस नोट के जरिए जान से मारने की धमकी मिलने के बाद पीड़ित कारोबारी और उसका परिवार भय के साये में जीने को मजबूर है।

पुलिस जांच में सामने आया है कि रंगदारी की यह मांग इंटरनेशनल व्हाट्सएप नंबर से की गई थी और कॉल करने वाले ने खुद को रोहित गोदारा बताया। 30 दिसंबर को पहली बार और फिर 31 दिसंबर की शाम दोबारा कॉल कर कारोबारी को चेतावनी दी

गई कि अगर रकम नहीं दी गई तो अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहे। इस घटना ने साफ कर दिया है कि रोहित गोदारा न केवल सक्रिय है, बल्कि दूर बैठकर भी राजस्थान में अपना खौफ कायम रखने में कामयाब हो रहा है। बीकानेर जिले के लूणकरणसर का रहने वाला रोहित गोदारा कभी अपराधी नहीं था। बताया जाता है कि वह मोबाइल रिपेयरिंग का काम करता था और युवाओं को यह हुनर सिखाने के लिए उसने एक छोटी संस्था भी खोल रखी थी। उसका जन्म 1989 के आसपास हुआ और महज 11 साल की उम्र में उसकी शादी कर दी गई। शुरुआती जीवन सामान्य था, लेकिन पारिवारिक विवादों ने उसकी जिंदगी की दिशा ही बदल दी।

साल 2021 में रोहित की पत्नी ने उसके खिलाफ दहेज प्रताड़ना और जबरन गर्भपात जैसे गंभीर आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया। इसी मामले में रोहित को करीब तीन महीने जेल में रहना पड़ा। पुलिस और जानकारों का मानना है कि यही वह दौर था, जिसने रोहित को अपराध की दुनिया की ओर धकेल दिया। जेल में रहने के दौरान उसकी मुलाकात कई कुख्यात अपराधियों से हुई और वहीं से उसका संपर्क आपराधिक नेटवर्क से जुड़ता चला गया।

जेल से बाहर आने के बाद रोहित गोदारा पूरी तरह बदल चुका था। वह धीरे-धीरे अपराध की राह पर आगे बढ़ता गया और लूट, धमकी और फिरौती जैसे मामलों में उसका नाम सामने आने लगा। इसी दौरान उसका संपर्क कुख्यात लॉरेंस बिश्नोई गैंग से हुआ। माना जाता है कि बिश्नोई गैंग के संरक्षण और नेटवर्क ने रोहित को तेजी से आगे बढ़ाया। राजस्थान में रंगदारी के कई मामलों में रोहित गोदारा और लॉरेंस बिश्नोई गैंग का नाम एक साथ सामने आया है। साल 2022 में रोहित गोदारा ने फर्जी पासपोर्ट के जरिए भारत छोड़ दिया और दुबई भाग गया। वहां से उसने अपने गैंग के कामकाज को आगे बढ़ाया और भारत में बैठे लोगों को धमकियां देने का सिलसिला जारी रखा। पुलिस सूत्रों के अनुसार, इसके बाद वह अमेरिका पहुंच गया, जहां से वह लॉरेंस बिश्नोई गैंग से जुड़े नेटवर्क को ऑपरेट कर रहा है। हालांकि उसकी सटीक लोकेशन को लेकर अभी भी जांच एजेंसियां पूरी तरह आश्वस्त नहीं हैं।

राजस्थान पुलिस के लिए रोहित गोदारा एक बड़ी चुनौती बन चुका है। उसकी खास रणनीति यह है कि वह खुद सामने आए बिना डिजिटल माध्यमों से लोगों को डराता है। इंटरनेशनल नंबर, सोशल मीडिया ऐप्स और वॉइस नोट के जरिए धमकी देना उसकी पहचान बन चुकी है। इससे न केवल पीड़ितों में डर फैलता है, बल्कि जांच एजेंसियों के लिए भी उसे ट्रैक करना मुश्किल हो जाता है।

जयपुर के ताजा रंगदारी मामले ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर कैसे एक साधारण युवक महज कुछ सालों में इतना बड़ा अपराधी बन गया। तीन महीने की जेल, गलत संगत और अंतरराष्ट्रीय गैंग से जुड़ाव ने रोहित गोदारा की जिंदगी को पूरी तरह बदल दिया। आज वह कानून से दूर बैठकर भी राजस्थान में आतंक का पर्याय बना हुआ है।

लड़की भगाने के आरोप में युवक पर हैवानियत, नाक काटी और हाथ-पैर तोड़े, जोधपुर में भीड़ का खौफनाक इंसाफ

(जीएनएस)। जोधपुर। राजस्थान के जोधपुर जिले से इंसानियत को शर्मसार करने वाली एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। लूनी थाना क्षेत्र में लड़की को भगा ले जाने के आरोप में एक युवक को ग्रामीणों ने कानून अपने हाथ में लेते हुए ऐसी अमानवीय सजा दी, जिसे जानकर रूह कांप उठे। गुस्साई भीड़ ने युवक को घेरकर बेरहमी से पीटा, उसके दोनों हाथ-पैर तोड़ दिए और धारदार हथियार से उसकी नाक काट दी। गंभीर रूप से घायल युवक को खून से लथपथ हालत में मथुरादास माथुर अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत नाजुक बताई जा रही है।

पुलिस के अनुसार घायल युवक की पहचान दिनेश बिश्नोई के रूप में हुई है। सहायक पुलिस आयुक्त (बोरानाडा) आनंदसिंह राजपुरोहित ने बताया कि दिनेश पर आरोप है कि वह करीब आठ दिन पहले पड़ोसी गांव की एक युवती को भगा ले गया था। युवती के लापता होने के बाद उसके परिजनों ने पुलिस में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। मामले को लेकर गांव में तनाव का माहौल था और पुलिस के साथ-साथ ग्रामीण भी युवक की तलाश में जुटे थे। लगातार दबाव के बाद गुरुवार को दिनेश ने युवती को वापस छोड़ दिया था, जिससे लगा कि मामला शांत हो जाएगा। लेकिन शुक्रवार को हालात ने अचानक हिंसक मोड़ ले लिया। दोपहर के समय दिनेश एक एसयूवी वाहन से अपने गांव पहुंचा। जैसे ही ग्रामीणों को उसके आने की खबर मिली, लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। देखते ही देखते बड़ी संख्या में ग्रामीण इकट्ठा हो गए और युवक पर हमला कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, हमलावरों ने लाठियों और धारदार हथियारों से उस पर ताबड़तोड़ वार किए। मारपीट के दौरान उसके दोनों हाथ और पैर बुरी तरह टूट गए। हैवानियत की हद तब पार हुई, जब एक हमलावर ने धारदार हथियार से उसकी नाक काट दी। अत्यधिक रक्तस्राव के कारण युवक मौके पर ही बेसुध हो गया। इस दौरान उसकी गाड़ी को भी निशाना बनाया गया और जमकर तोड़फोड़ की गई।

घटना की सूचना मिलते ही लूनी थाना पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक हमलावर फरार हो चुके थे। पुलिस ने गंभीर रूप से घायल दिनेश को तुरंत मथुरादास माथुर अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसकी हालत गंभीर बताई है। अस्पताल में युवक का इलाज जारी है और किसी अप्रिय घटना की आशंका को देखते हुए पुलिस बल तैनात किया गया है।

पुलिस जांच में सामने आया है कि दिनेश बिश्नोई पहले से ही आपराधिक मामलों में संलिप्त रहा है। थानाधिकारी सुरेश चौधरी के अनुसार, युवक एनडीपीएस एक्ट के एक मामले में पहले गिरफ्तार हो चुका है और पैरोल पर छूटने के बाद फरार हो गया था। इसके अलावा वह पोक्सो एक्ट के एक मामले में भी आरोपी है और जमानत पर रिहा होने के बावजूद अदालत में पेश नहीं हो रहा था। पुलिस का कहना है कि युवक लंबे समय से कानून से बचता फिर रहा था। इस जघन्य घटना के बाद पूरे क्षेत्र में तनाव व्याप्त है। पुलिस ने हमलावरों की पहचान कर उनकी गिरफ्तारी के प्रयास तेज कर दिए हैं और संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है। अधिकारियों ने साफ किया है कि किसी भी हाल में कानून हाथ में लेने वालों को बख्शा नहीं जाएगा और दोषियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

वर्ष 2025 के दौरान अहमदाबाद मंडल में कुल 2047 अलार्म चेन पुलिंग की घटनाएँ दर्ज की गई एवं 1855 मामलों में केस दर्ज किए गए

रेलवे अधिनियम 1989 की धारा 141 के तहत 1813 व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही की गई,वर्ष 2025 के दौरान अनावश्यक अलार्म चेन पुलिंग के मामलों में कुल 5,65,100 का जुर्माना वसूला गया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल का रेलवे सुरक्षा बल (RPF) यात्रियों की सुरक्षा, रेलवे संपत्ति की रक्षा और स्टेशनों पर सुरक्षित वातावरण बनाए रखने के लिए पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य कर रहा है। साथ ही वर्ष 2025 के दौरान अलार्म चेन पुलिंग (ACP) की घटनाओं पर कड़ी निगरानी रखते हुए अनुकरणीय कार्य किया है। यात्रियों की सुरक्षा, ट्रेनों की समयपालनता तथा निर्बाध रेल परिचालन सुनिश्चित करने हेतु RPF द्वारा निरंतर सतर्कता, त्वरित कार्रवाई एवं प्रभावी समन्वय के परिणामस्वरूप अलार्म चेन पुलिंग (ACP) मामलों में उल्लेखनीय नियंत्रण स्थापित किया गया। 01 जनवरी 2025 से 31 दिसंबर 2025 के बीच अहमदाबाद मंडल में कुल 2047 अलार्म चेन पुलिंग की घटनाएँ दर्ज की गईं। इनमें से 1855 मामलों में केस दर्ज किए गए, जबकि शेष मामलों में प्रारंभिक जांच के बाद वैधानिक कारणों से केस दर्ज नहीं किया गया। RPF ने 1813 व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही की तथा 5,65,100 का जुर्माना वसूला गया।

मण्डल रेल प्रबंधक अहमदाबाद के अनुसार 1142 अलार्म चेन पुलिंग घटनाएँ स्टेशनों पर तथा 905 घटनाएँ सेक्शनों में रिपोर्ट की गईं। स्टेशनों पर दर्ज 1142 मामलों में से 1031

मामलों में केस दर्ज किए गए, जबकि सेक्शनों में दर्ज 905 मामलों में 812 मामलों में विधिवत कार्रवाई की गई। दिन के विभिन्न समयों में अलार्म चेन पुलिंग (ACP) की घटनाओं का विश्लेषण कर RPF द्वारा संवेदनशील समयावधियों में विशेष निगरानी और गश्त की व्यवस्था की गई।

स्टेशनों में अलार्म चेन पुलिंग की दृष्टि से अहमदाबाद (450), साबरमती (189), मणिनगर (50), महेसाणा (92), विरामगाम (42) एवं गांधीधाम (38) प्रमुख रूप से प्रभावित रहे। वहीं, सेक्शन स्तर पर गेरतपुर–अहमदाबाद (142), अहमदाबाद–विरामगाम (122), उंझा–पालनपुर (71), झुंड–समाख्याली (63) तथा समाख्याली–भुज (68), अहमदाबाद-साबरमती (49) सेक्शनों में अधिक अलार्म चेन पुलिंग (ACP) की घटनाएँ दर्ज की गईं, जहाँ RPF द्वारा अतिरिक्त निगरानी एवं त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की गई।

अलार्म चेन पुलिंग के प्रमुख कारणों में यात्री द्वारा गलत ट्रेन या कोच में चढ़ना, यात्री का सामान छूट जाना तथा साथी यात्री छुट जाना आदि शामिल है। इन कारणों को ध्यान में रखते हुए RPF द्वारा यात्रियों को जागरूक करने हेतु निरंतर अभियान चलाए गए तथा रेलवे स्टाफ के साथ समन्वय बढ़ाया गया।

इसके अतिरिक्त, कुछ ट्रेनों जैसे आश्रम एक्सप्रेस, कच्छ एक्सप्रेस, अला हजरत एक्सप्रेस, अरावली एक्सप्रेस एवं लोकशक्ति एक्सप्रेस में अलार्म चेन पुलिंग की घटनाएँ अपेक्षाकृत अधिक पाई गईं, जिस पर RPF द्वारा विशेष निगरानी रखी जा रही है। रेल प्रशासन एवं RPF यात्रियों से अपील करता है कि अलार्म चेन का उपयोग केवल आपात स्थिति में ही करें। अनावश्यक अलार्म चेन पुलिंग न केवल ट्रेन परिचालन को बाधित करता है, बल्कि अन्य यात्रियों की सुरक्षा एवं सुविधा को भी प्रभावित करता है। अहमदाबाद मंडल RPF सुरक्षित, संरक्षित और समयबद्ध रेल परिचालन के लिए भविष्य में भी इसी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करता रहेगा।

कैग की चेतावनी अनसुनी, इंदौर में दूषित पानी बना मौत का कारण

(जीएनएस)। इंदौर। देश के सबसे स्वच्छ शहर का तमगा पाने वाले इंदौर में पेयजल व्यवस्था को लेकर सामने आई त्रासदी ने प्रशासनिक दावों की पोल खोल दी है। भागीरथपुरा इलाके में दूषित पानी पीने से हुई मौतों के बाद अब यह स्पष्ट होता जा रहा है कि यह हादसा अचानक नहीं हुआ, बल्कि वर्षों से की जा रही लापरवाही का नतीजा है। गैर सरकारी संगठन 'जन स्वास्थ्य अभियान मध्यप्रदेश' ने नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक यानी कैग की 2019 की रिपोर्ट का हवाला देते हुए दावा किया है कि इंदौर की पेयजल आपूर्ति प्रणाली में गंभीर खामियों को लेकर पहले ही आगाह किया जा चुका था, लेकिन जिम्मेदार विभागों ने समय रहते कोई ठोस कदम नहीं उठाया। संगठन के संयोजक अमूल्य निधि का कहना है कि कैग रिपोर्ट में इंदौर सहित मध्यप्रदेश के कई बड़े शहरों में शुद्ध पेयजल की उपलब्धता और जल आपूर्ति तंत्र की स्थिति पर गंभीर सवाल उठाए गए थे। रिपोर्ट में साफ तौर पर बताया गया था कि बड़ी आबादी को सुरक्षित और मानकों के अनुरूप पीने का पानी नहीं मिल पा रहा है। इसके बावजूद प्रशासनिक स्तर पर इस चेतावनी को गंभीरता से नहीं लिया गया। अब उसी अनदेखी का खामियाजा आम नागरिकों को अपनी जान देकर चुकाना पड़ रहा है।

कैग रिपोर्ट के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। वर्ष 2013 से 2018 के बीच इंदौर और भोपाल में जल जनित बीमारियों के करीब साढ़े पांच लाख मामले दर्ज किए गए थे। इनमें अकेले इंदौर में ही पांच लाख से अधिक मामले सामने आए थे। रिपोर्ट के अनुसार, इस अवधि में इंदौर के 5.33 लाख परिवारों और भोपाल के 3.62 लाख परिवारों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं

था। पानी की गुणवत्ता जांच के दौरान लिए गए 4,481 नमूने पीने योग्य नहीं पाए गए थे। इसका मतलब साफ है कि दूषित पानी की समस्या वर्षों से मौजूद थी, लेकिन इसे दूर करने के लिए न तो स्थायी समाधान निकाला गया और न ही समयबद्ध सुधार किए गए।

कैग रिपोर्ट में नगर निगमों की कार्यप्रणाली पर भी गंभीर सवाल खड़े किए गए थे। इसमें उल्लेख किया गया था कि पाइपलाइन लीकेज की शिकायतों को दूर करने में नगर निगमों को 22 दिन से लेकर 108 दिन तक का समय लग रहा था। इतनी लंबी देरी के कारण पाइपलाइनों में गंदा पानी, सीवेज और अन्य हानिकारक तत्व मिल जाते हैं, जिससे पूरा आपूर्ति तंत्र दूषित हो जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि पाइपलाइन लीकेज को समय पर ठीक न किया जाना ही जल जनित बीमारियों और मौजूदा मौतों का एक बड़ा कारण है। भागीरथपुरा में हुई घटनाओं ने यह भी उजागर कर दिया है कि शहरी विकास और स्वच्छता के बड़े-बड़े दावों के बीच बुनियादी सुविधाओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया। शहर की सफाई व्यवस्था और रैंकिंग पर तो करोड़ों रुपये खर्च किए गए, लेकिन पीने के पानी की गुणवत्ता, नियमित जांच और पाइपलाइन नेटवर्क के रखरखाव को प्राथमिकता नहीं मिली। नतीजतन, आम लोग अनजाने में जहर मिला पानी पीने को मजबूर हो गए।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए 'जन स्वास्थ्य अभियान मध्यप्रदेश' ने केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटील और राज्य के मुख्य सचिव अनुराग जैन को पत्र लिखकर तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। संगठन ने मांग की है कि कैग की रिपोर्ट में दी गई सिफारिशों को अब बिना किसी देरी के लागू किया जाए। इसके साथ ही राज्य और नगर निगम स्तर पर पेयजल आपूर्ति की स्वतंत्र और नियमित गुणवत्ता जांच, पाइपलाइन नेटवर्क की समयबद्ध मरम्मत और जवाबदेही तय करने की व्यवस्था की जाए।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि शुद्ध पेयजल किसी भी शहर की सबसे बुनियादी जरूरत है और इसमें की गई लापरवाही सीधे मानव जीवन को खतरे में डालती है। इंदौर जैसी बड़ी और तेजी से बढ़ती आबादी वाले शहर में यदि पेयजल व्यवस्था सुरक्षित नहीं है, तो यह सिर्फ एक शहर की समस्या नहीं बल्कि पूरे शहरी प्रशासन मॉडल पर सवाल है।

भागीरथपुरा की त्रासदी ने यह साफ कर दिया है कि अगर चेतावनियों और रिपोर्टों को फाइलों में दबाकर रखा गया, तो उसका अंजाम जानलेवा हो सकता है। अब देखना यह होगा कि इस घटना के बाद प्रशासन सिर्फ बयानबाजी और अस्थायी इंतजामों तक सीमित रहता है या फिर वास्तव में कैग की वर्षों पुरानी चेतावनी से सबक लेकर स्थायी सुधार की दिशा में ठोस कदम उठाता है।

6 और 10 जनवरी 2026 की साबरमती-जैसलमर एक्सप्रेस पोकरण स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मण्डल में राईका बाग पैलेस-जैसलमर सेक्शन में जेठा चांदन-थईरात हमीरा स्टेशनों के बीच ब्रिज नं.170 और जैसलमेर-थईरात हमीरा स्टेशनों के बीच ब्रिज नं. 179 पर इंजीनियरिंग कार्य हेतु ट्राफिक ब्लॉक लिया गया है। जिसके कारण साबरमती-जैसलमर एक्सप्रेस आंशिक निरस्त रहेगी। जिसका विवरण निम्नानुसार हैः

▸▸ट्रेन संख्या 20492 साबरमती-जैसलमर एक्सप्रेस 06 और 10 जनवरी 2026 को पोकरण स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए यह ट्रेन पोकरण और जैसलमर के बीच आंशिक निरस्त रहेगी। ▸▸ट्रेन संख्या 20491 जैसलमर-साबरमती एक्सप्रेस 07 और 11 जनवरी 2026 को पोकरण स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए यह ट्रेन जैसलमर और पोकरण के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

हनीट्रैप से शुरू हुई साजिश, अश्लील वीडियो के दम पर 40 लाख की वसूली की कोशिश, बाड़मेर पुलिस ने किया पर्दाफाश

(जीएनएस)। बाड़मेर। राजस्थान के बाड़मेर जिले से ब्लैकमेलिंग का एक सनसनीखेज मामला सामने आया है, जिसमें एक वकील को हनीट्रैप में फंसाकर अश्लील वीडियो बनाने और उसके जरिए मोटी रकम ऐंठने की साजिश रची गई। मामले में बाड़मेर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए एक युवती सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जांच में सामने आया है कि आरोपियों ने पहले पीड़ित से हजारों रुपये वसूले और फिर 40 लाख रुपये की बड़ी रकम की मांग करने लगे। पुलिस के अनुसार, इस साजिश की मुख्य आरोपी प्रियंका पश्चिम बंगाल की रहने वाली है, जो फिलहाल दिल्ली में रह रही थी। उसका साथी कमलसिंह बाड़मेर जिले के लक्ष्मीनगर क्षेत्र का निवासी है। दोनों ने मिलकर एक वकील को अपने जाल में फंसाया। पीड़ित वकील ने पुलिस को बताया कि युवती ने पहले दोस्ती का झांसा दिया और फिर मिलने के लिए बुलाया। मुलाकात के दौरान योजनाबद्ध तरीके से उसकी अश्लील वीडियो रिकॉर्ड कर ली गई। इसके बाद वीडियो के आधार पर ब्लैकमेलिंग का खेल शुरू हुआ।

पीड़ित के अनुसार, आरोपियों ने धमकी

दी कि अगर पैसे नहीं दिए गए तो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दी जाएगी और उसे झूठे रेप केस में फंसा दिया जाएगा। इन धमकियों से डरे वकील से पहले 50 हजार रुपये की रकम वसूल ली गई। इसके बाद आरोपियों का हौसला बढ़ता गया और उन्होंने सीधे 40 लाख रुपये की मांग रख दी। लगातार दबाव और मानसिक प्रताड़ना से परेशान होकर पीड़ित ने आखिरकार बाड़मेर कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई। शिकायत मिलते ही पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच शुरू की। तकनीकी साक्ष्यों और पीड़ित के बयान के आधार पर पुलिस ने शनिवार को कार्रवाई करते हुए प्रियंका और उसके साथी कमलसिंह सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से पीड़ित से वसूले गए 50 हजार रुपये भी बरामद किए हैं। सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें दो दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि प्रारंभिक जांच में यह मामला संगठित ब्लैकमेलिंग गिरोह का प्रतीत हो रहा है। आशंका जताई जा रही है कि आरोपियों ने इससे पहले भी इसी तरह लोगों को निशाना बनाया हो सकता है। रिमांड के दौरान आरोपियों से मोबाइल फोन, सोशल मीडिया अकाउंट्स, वीडियो रिकॉर्डिंग और पैसों के लेन-देन से जुड़े कई अहम सवालों पर पूछताछ की जा रही है। पुलिस यह भी पता लगाने में जुटी है कि इस गिरोह में और कौन-कौन लोग शामिल हैं और क्या इसके तार किसी बड़े नेटवर्क से जुड़े हुए हैं। इस घटना ने एक बार फिर हनीट्रैप और डिजिटल ब्लैकमेलिंग के बढ़ते खतरे को उजागर कर दिया है। पुलिस ने आम लोगों से अपील की है कि वे सोशल मीडिया या ऑनलाइन संपर्क के दौरान सतर्क रहें और किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें। बाड़मेर पुलिस का कहना है कि मामले की जांच हर पहलू से की जा रही है और दोषियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं पर रोक लगाई जा सके।

‘लिगेसी वेस्ट मुक्त गुजरात’ की दिशा में बढ़ते कदम, अब तक 273.33 लाख मीट्रिक टन पुराने कूड़े का निस्तारण

- मार्च 2026 तक राज्य में 100% लिगेसी वेस्ट निपटान का लक्ष्य, शहरों में वर्षों पुराने कूड़े के निस्तारण के मामले में गुजरात बड़े राज्यों में अग्रणी
- निर्मल गुजरात 2.0 योजना के तहत शहरी स्थानीय निकायों के लिए लिगेसी वेस्ट के वैज्ञानिक निस्तारण के लिए 75 करोड़ रुपए आवंटित

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में राज्य में शहरीकरण को एक नई दिशा दी थी। उन्होंने गुजरात में योजनाबद्ध शहरी विकास, मजबूत नगर पालिका व्यवस्था और आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर की मजबूत आधारशिला रखी थी। आज मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार ‘शहरीकरण समस्या नहीं, बल्कि अवसर’ के मंत्र के साथ शहरों को ग्रीन, क्लीन और रहने लायक बनाने के लिए लगातार काम कर रही है। जब बात शहरीकरण की हो, तब स्वच्छता, आधुनिक और टिकाऊ ढांचागत सुविधा के अलावा लिगेसी वेस्ट यानी वर्षों पुराने कूड़े का निस्तारण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। लिगेसी वेस्ट निस्तारण के व्यापक अभियान के परिणामस्वरूप गुजरात वर्षों पुराने कूड़े के निस्तारण के मामले में बड़े राज्यों की श्रेणी में शीर्ष प्रदर्शन करने वाला राज्य बन गया है।

लिगेसी वेस्ट मैनेजमेंट : शहरी विकास का महत्वपूर्ण मानदंड

गुजरात सरकार के शहरी विकास विभाग ने शहरों में स्वच्छता, आधुनिक और टिकाऊ ढांगागत सुविधाओं और नागरिकों के ईज ऑफ लिविंग यानी जीवन जीने की सुगमता को बढ़ाने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है, जिसके परिणामस्वरूप राज्य ने शहरी विकास के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाई है। उल्लेखनीय बात यह है कि गुजरात वर्षों से डम्प साइटों में जमा हुए कूड़े के वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण के मामले में भी बड़े राज्यों की श्रेणी में सबसे आगे है। लिगेसी वेस्ट मैनेजमेंट शहरी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक मापदंड है। वर्षों से डम्प साइटों में जमा हुए कूड़े के निपटान से प्रदूषण और स्वास्थ्य का खतरा कम होता है। साथ ही, खाली हुई भूमि विकास कार्यों को बढ़ावा देने और ग्रीन स्पेस बढ़ाने के लिए उपयोगी सिद्ध होती है।

लिगेसी वेस्ट के निपटान से 902 एकड़ भूमि खाली हुई, मीथेन उत्सर्जन में आई उल्लेखनीय कमी

राज्य के महानगर पालिका और नगर पालिका क्षेत्रों में डम्प साइटों के साफ होने से बड़े पैमाने पर भूमि खाली हुई है। राज्य सरकार ने लिगेसी वेस्ट के निस्तारण के लिए जो प्रयास शुरू किए हैं, उसके परिणामस्वरूप लगभग 902 एकड़ भूमि खाली हुई है। इस जमीन का उपयोग प्रोसेसिंग प्लांट बनाने के काम के लिए किया गया है। इसके अलावा, अहमदाबाद की बोपल-घूमा डम्प साइट तथा राजकोट की नाकरावाड़ी डम्प साइट को साफ करके मियावाकी वन बनाए गए हैं। डम्प साइटों के वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण से मीथेन गैस के उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आई है तथा डम्प साइटों पर कूड़े में आग लगने की घटनाओं से संबंधित समस्याओं का प्रभावी रूप से समाधान हुआ है।

मार्च 2026 तक राज्य के शहरों में 100% लिगेसी वेस्ट निस्तारण का लक्ष्य

गुजरात के शहरी क्षेत्रों में कुल 304.09 लाख मीट्रिक टन लिगेसी वेस्ट की पहचान की गई है, जिसमें से अब तक 273.33 लाख मीट्रिक टन कूड़े का वैज्ञानिक तरीके से निपटान किया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि गुजरात सरकार ने मार्च 2026 तक राज्य के शहरों में 100% लिगेसी वेस्ट रिमेडिएशन का लक्ष्य निर्धारित किया है।

लिगेसी वेस्ट के निस्तारण से स्वच्छता और शहरी विकास को मिली एक नई दिशा

गुजरात सरकार शहरों में वर्षों से जमा कूड़ों के वैज्ञानिक तरीके से निपटान के जरिए पर्यावरण संरक्षण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और शहरी विकास को मजबूत करने के लिए लगातार प्रयासरत है। राज्य सरकार ने निर्मल गुजरात 2.0 योजना के अंतर्गत शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) के लिए लिगेसी वेस्ट के वैज्ञानिक तरीके से निपटान के लिए 75 करोड़ रुपए का विशेष फंड आवंटित किया है। यह योजना स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) 2.0 के अनुरूप है और ‘कूड़ा मुक्त शहरों’ के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में कार्यरत है। लिगेसी वेस्ट मैनेजमेंट के माध्यम से शहरों को और भी स्वच्छ, स्वस्थ और टिकाऊ बनाने की दिशा में गुजरात देश के अन्य राज्यों के लिए एक मिसाल बन रहा है।

आसमान में उतरा साल का पहला महाचंद्र, 2026 के पहले सुपरमून ने मोहा देशभर का नज़ारा

(जीएनएस)। कोलकाता/मुंबई। वर्ष 2026 की शुरुआत के साथ ही देशभर के लोगों को शनिवार रात एक दुर्लभ और मनमोहक खगोलीय दृश्य देखने को मिला, जब आसमान में साल का पहला सुपरमून पूरी शान के साथ नजर आया। जैसे ही रात गहराई, चंद्रमा ने अपनी असाधारण चमक और विशाल आकार से लोगों का ध्यान खींच लिया। महानगरों से लेकर कस्बों और गांवों तक, छतों, खुले मैदानों और सड़कों पर लोग इस अद्भुत नज़ारे को देखने के लिए ठहर गए। सामान्य पूर्णिमा की तुलना में चंद्रमा इस बार करीब 14 प्रतिशत बड़ा और लगभग 30 प्रतिशत अधिक चमकीला दिखाई दिया, जिससे ऐसा प्रतीत हुआ मानो चांद धरती के बेहद करीब आ गया हो।

खगोल विज्ञान के जानकारों के अनुसार यह 2026 का पहला सुपरमून था, जिसे खगोलीय भाषा में “सुपर वुल्फ मून” कहा जाता है। सुपरमून तब दिखाई देता है, जब पूर्णिमा के समय चंद्रमा अपनी कक्षा में पृथ्वी के सबसे निकट बिंदु पर होता है। आमतौर पर चंद्रमा पृथ्वी से औसतन लगभग 3 लाख 84 हजार किलोमीटर की दूरी पर रहता है, लेकिन जब वह अपने नजदीकी बिंदु यानी पेरीजी पर पहुंचता है, तो उसकी दूरी घटकर लगभग 3 लाख 63 हजार किलोमीटर रह जाती है। इसी वजह से उसका आकार और चमक सामान्य से कहीं अधिक नजर आती है। शनिवार रात भी कुछ ऐसा ही दृश्य देखने को मिला, जिसने आसमान को मानो रौशन कर दिया।

देश के कई हिस्सों में मौसम साफ होने के कारण सुपरमून का दृश्य बेहद स्पष्ट रहा। कोलकाता, मुंबई, दिल्ली, भोपाल, जयपुर और लखनऊ जैसे शहरों में लोगों ने बिना किसी उपकरण के ही इस खगोलीय घटना का आनंद लिया। वहीं, जिन लोगों के पास दूरबीन या छोटे टेलिस्कोप थे, उन्होंने चंद्रमा की सतह पर मौजूद गड्ढों और पहाड़ी संरचनाओं को भी साफ-साफ देखा।

महायुति में सत्ता के साथ सियासी संग्राम, जुबानी जंग ने खोली दरारें

(जीएनएस)। पुणे। महाराष्ट्र की सत्ताधारी महायुति में सब कुछ ठीक नहीं है, इसके संकेत अब खुलकर सामने आने लगे हैं। पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ नगर निगम चुनावों के बीच भ्रष्टाचार के मुद्दे पर डिप्टी सीएम अजित पवार और भाजपा के बीच छिड़ी जुबानी जंग ने गठबंधन की अंदरूनी खींचतान को उजागर कर दिया है। चुनावी मंच से लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस तक तीखे बयान, आरोप-प्रत्यारोप और पलटवार का सिलसिला लगातार तेज होता जा रहा है, जिससे यह सवाल उठने लगा है कि क्या महायुति सिर्फ सत्ता का गणित बनकर रह गई है।

दरअसल, विवाद की शुरुआत तब हुई जब भाजपा नेता और केंद्रीय मंत्री मुरलीधर मोहोल ने पुणे में एनसीपी उम्मीदवारों के कथित आपराधिक रिकॉर्ड पर सवाल खड़े किए। इसके जवाब में अजित पवार ने न सिर्फ भाजपा नेताओं को आड़े हाथों लिया, बल्कि पुराने आरोपों की याद दिलाते हुए कहा कि जिन लोगों ने कभी उन पर 70 हजार करोड़ के सिंचाई घोटाले का आरोप लगाया था, वही आज उनके साथ सत्ता में बैठे हैं। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि जब तक किसी मामले में अदालत दोष सिद्ध न कर दे, तब तक किसी को भ्रष्ट या अपराधी करार नहीं दिया जा सकता। पवार का यह बयान सीधे-सीधे भाजपा के उस नैरेटिव पर सवाल था, जिसके सहारे वह विपक्ष पर लगातार हमलावर रहती है। अजित पवार ने पुणे के एक फरार गैंगस्टर का जिक्र करते हुए भाजपा को भी अपने भीतर झांकने की सलाह दी। उनका कहना था कि अगर राजनीतिक दल अपने-अपने गिरेबान में झांकें, तो शायद कई सवालों के जवाब खुद ही मिल जाएं। इस बयान को भाजपा ने गठबंधन की मर्यादा के खिलाफ बताया और इसे खुली चुनौती के तौर पर लिया।

अजित पवार के तीखे तेवरों से नाराज भाजपा प्रदेश अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण ने भी पलटवार करने में देर नहीं लगाई। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि अगर भाजपा ने भी बोलना शुरू किया और पुराने पन्ने पलटे, तो अजित पवार के लिए हालात काफी मुश्किल हो सकते हैं। चव्हाण ने सवाल उठाया कि क्या अजित पवार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार की कार्यशैली पर सवाल उठा रहे हैं। उन्होंने इसे सत्ता का अहंकार बताते हुए कहा कि गठबंधन में रहते हुए इस तरह के बयान महायुति के मूल सिद्धांतों के खिलाफ हैं और इससे जनता में गलत संदेश जाता है।

इस पूरे विवाद ने तब और सियासी रंग ले लिया, जब शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने महायुति की अंदरूनी लड़ाई पर तंज कसते हुए नया सियासी बम फोड़ दिया। राउत ने कहा कि अगर अजित पवार खुद भाजपा पर भ्रष्टाचार के आरोप लगा रहे हैं, तो उन्हें सत्ता में बने रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। उन्होंने सुझाव दिया कि अजित पवार को तुरंत महायुति सरकार छोड़ देनी चाहिए और अपनी पार्टी का विलय शरद पवार के नेतृत्व वाली मूल एनसीपी में कर लेना चाहिए। राउत ने कटाक्ष करते हुए कहा कि जो नेता भाजपा के साथ रहकर असहज महसूस कर रहा है और चुनावी जरूरतों के लिए अपने पुराने खेमे की ओर लौट रहा है, उसे आधिकारिक तौर पर घर वापसी कर लेनी चाहिए।

सीमा पार से ड्रोन के जरिए नशे की खेप भेजने की साजिश नाकाम श्रीगंगानगर में 20 करोड़ की हेरोइन जब्त, तीन तस्कर दबोचे गए

(जीएनएस)। श्रीगंगानगर। भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तान की ओर से की जा रही नापाक हरकत को राजस्थान पुलिस और बीएसएफ ने समय रहते नाकाम कर दिया है। श्रीगंगानगर जिले के रावला थाना क्षेत्र में ड्रोन के जरिए पाकिस्तान से भेजी गई करीब 20 करोड़ रुपये कीमत की हेरोइन बरामद की गई है। इस कार्रवाई में पुलिस ने तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है, जिनके कब्जे से भारी मात्रा में हेरोइन के साथ एक चाइना मेड ड्रोन भी जब्त किया गया है। इस बड़ी कामयाबी के बाद सीमा सुरक्षा को लेकर सभी एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। पुलिस अधीक्षक अमृता दुहन के निर्देशन में रावला पुलिस ने बीएसएफ के सहयोग से यह कार्रवाई की। पुलिस को भारत-पाकिस्तान सीमा से सटे रावला क्षेत्र में हेरोइन की अंतरराष्ट्रीय तस्करी की पुख्ता सूचना मिली थी। इसके बाद अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामेश्वर लाल और डीएसपी प्रशांत कौशिक के नेतृत्व में विशेष टीमें गठित की गईं और इलाके में नाकाबंदी व गश्त तेज कर दी गई। शुक्रवार रात गश्त के दौरान गांव 15 केएनडी के पास नहर किनारे तीन युवक

संदिग्ध हालात में नजर आए। उनके पास एक प्लास्टिक का कट्टा था और पुलिस वाहन को देखकर वे भागने की कोशिश करने लगे। पुलिस ने घेराबंदी कर तीनों को मौके पर ही पकड़ लिया।

पकड़े गए युवकों से जब पूछताछ की गई तो वे कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे सके। इसके बाद तलाशी ली गई, जिसमें उनके पास से कुल 4 किलो 88 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। साथ ही एक ड्रोन भी मिला, जिसका इस्तेमाल पाकिस्तान से हेरोइन भारत भेजने के लिए किया गया था। जांच में सामने आया कि यह ड्रोन डीजीआई (DJI) कंपनी का है, जिसे सीमा पार से उड़ाकर नशे की खेप भारतीय इलाके में गिराई गई थी। प्रारंभिक जांच के अनुसार, यह हेरोइन 29 और 30 दिसंबर की रात पाकिस्तान से ड्रोन के जरिए भारत में भेजी गई थी।

गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान अनूपगढ़ क्षेत्र के गांव 10 निवासी 26 वर्षीय जगनदीप सिंह उर्फ लब्बू सिंह, डबली राठान हनुमानगढ़ निवासी 21 वर्षीय नीटू सिंह उर्फ रवनीत सिंह और घड़साना के चक 4 एसटीआर निवासी 27 वर्षीय सतपाल सिंह के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, तीनों आरोपियों ने हेरोइन को आपस में बांटकर अपने-अपने पास छिपाकर रखा था। तलाशी के दौरान जगनदीप सिंह के पास से 1019 ग्राम, नीटू सिंह के पास से 2048 ग्राम और सतपाल सिंह के पास से 1021 ग्राम हेरोइन बरामद की गई। सतपाल के प्लास्टिक बैग में ही ड्रोन भी छिपाकर रखा गया था।

पुलिस अधीक्षक अमृता दुहन ने बताया कि रावला पुलिस अपराधों की रोकथाम के लिए लगातार गश्त कर रही है। दिलचस्प बात यह है कि 31 दिसंबर को इन्हीं तीनों आरोपियों को शांति भंग के एक मामले में गिरफ्तार किया गया था और कानूनी प्रक्रिया के बाद उन्हें जमानत पर छोड़ा गया था। जमानत पर रिहा होने के बाद पुलिस को इनपुट मिला कि भारत-पाकिस्तान सीमा के रास्ते ड्रोन से हेरोइन तस्करी की जा सकती है। इस सूचना के आधार पर पुलिस पूरी तरह सतर्क हो गई और आखिरकार बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया गया। इस मामले में तीनों आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया गया है और उनसे गहन पूछताछ की जा रही है। पुलिस को उम्मीद है कि पूछताछ में इस अंतरराष्ट्रीय तस्करी नेटवर्क से जुड़े और भी बड़े नाम सामने आ सकते हैं। यह भी पता लगाया जा रहा है कि पाकिस्तान में कौन लोग इस ड्रोन तस्करी के पीछे हैं और भारत में इसका नेटवर्क कहां तक फैला हुआ है।

भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा से महज चार किलोमीटर की दूरी पर इतनी बड़ी मात्रा में हेरोइन और ड्रोन की बरामदगी के बाद सुरक्षा एजेंसियां पूरी तरह अलर्ट हो गई हैं। सीमा पर ड्रोन के जरिए तस्करी के बढ़ते मामलों को देखते हुए निगरानी और सख्त कर दी गई है। पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने सीमा क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है और पूरे इलाके में नाकाबंदी कर संदिग्ध गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। इस कार्रवाई को नशे के खिलाफ चल रही लड़ाई में एक बड़ी सफलता माना जा रहा है, जिसने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि सुरक्षा एजेंसियां सीमा पार से होने वाली साजिशों को नाकाम करने के लिए पूरी तरह मुस्तैद हैं।

बर्थडे की खुशियां मातम में बदलीं, केक लेने निकला युवक पेट्रोल पंप पर कार से कुचला गया, मौत

(जीएनएस)। रांची। नए साल की उमंग और बेटे के जन्मदिन की तैयारियों में जुटे रांची के फूलचंद तिर्की के परिवार को क्या पता था कि 31 दिसंबर की रात उनके घर खुशियों के बजाय मातम लेकर आएगी। राजधानी रांची के जगन्नाथपुर थाना क्षेत्र में एक दिल दहला देने वाली घटना में 1 जनवरी को जन्मदिन मनाने वाले विवेक तिर्की की बेरहमी से कुचलकर हत्या कर दी गई। विवेक अपने दोस्तों के साथ सिर्फ बर्थडे केक खरीदने निकला था, लेकिन पेट्रोल पंप पर हुई एक मामूली कहासुनी ने उसकी जिंदगी छीन ली।

परिजनों के अनुसार, विवेक तिर्की 31 दिसंबर की रात अपने दोस्त अविनाश और प्रकाश के साथ स्कूटी से केक लेने निकला था। रास्ते में बिरसा चौक स्थित एचईसी मेन गेट के पास एक पेट्रोल पंप पर उसने स्कूटी में पेट्रोल भरवाने के लिए गाड़ी रोकी। इसी दौरान वहां मौजूद एक वैन कार से स्कूटी की हल्की टक्कर हो गई। इस छोटी सी बात को लेकर विवेक और कार सवारों के बीच मामूली नोकझोंक हुई, जिसे आसपास मौजूद लोगों ने सामान्य विवाद मानकर नजरअंदाज कर दिया।

लेकिन कुछ ही पलों बाद विवाद ने खौफनाक मोड़ ले लिया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, कार चालक ने पहले गाड़ी को पीछे किया और फिर अचानक तेज रफ्तार में आगे बढ़ाते हुए विवेक की स्कूटी को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही विवेक सड़क पर गिर पड़ा और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, कार उसे कुचलते हुए आगे निकल गई। पेट्रोल पंप पर मौजूद लोग चीख-पुकार करते रहे और कार को रोकने की कोशिश भी की, लेकिन चालक तेज गति से फरार हो गया।

घटना के तुरंत बाद गंभीर रूप से घायल विवेक को इलाज के लिए पहले डोरंडा अस्पताल ले जाया गया, जहां से उसकी हालत नाजुक देखते हुए रिम्स अस्पताल रेफर कर दिया गया। डॉक्टरों ने भरसक प्रयास किए, लेकिन अत्यधिक चोट और रक्तस्राव के कारण इलाज के दौरान विवेक ने दम तोड़ दिया। जिस बेटे के जन्मदिन का केक घर लाया जाना था, उसी बेटे की मौत की खबर ने पूरे परिवार को तोड़कर रख दिया।

पूरी वारदात पेट्रोल पंप पर लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। फुटेज में साफ दिखाई दे रहा है कि कैसे कार चालक जानबूझकर गाड़ी को पीछे करता है और फिर विवेक को निशाना बनाकर टक्कर मारता है। इसी फुटेज के आधार पर पुलिस ने कार को जब्त कर लिया है। हालांकि, घटना के बाद से कार चालक और उसके साथ मौजूद अन्य लोग फरार हैं।

मृतक के पिता फूलचंद तिर्की ने जगन्नाथपुर थाना में अपने बेटे की हत्या का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है। उन्होंने पुलिस को बताया कि उनका बेटा किसी झगड़े की नीयत से नहीं, बल्कि सिर्फ पेट्रोल भरवाने और केक लेने गया था। एक मामूली विवाद को लेकर जिस तरह से उसे कुचलकर मार दिया गया, वह साफ तौर पर हत्या का मामला है। पिता का कहना है कि उनका परिवार नए साल और बेटे के जन्मदिन की तैयारियों में जुटा था, लेकिन अब घर में सिर्फ मातम और सन्नाटा है। पुलिस का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान की जा रही है और जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इस घटना के बाद इलाके में आक्रोश का माहौल है।

ममता के किले में दरार? मौसम नूर की कांग्रेस में वापसी से बंगाल की सियासत में भूचाल

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल में अगले विधानसभा चुनाव से पहले सियासी पारा लगातार चढ़ता जा रहा है और इसी बीच तृणमूल कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। पार्टी की राज्यसभा सांसद मौसम बेनजीर नूर का कांग्रेस में शामिल होना सिर्फ एक दलबदल नहीं, बल्कि सत्तारूढ़ दल के भीतर लंबे समय से चल रहे असंतोष और आंतरिक खींचतान की कहानी भी बयां करता है। शनिवार को कांग्रेस का दामन थामते ही मौसम नूर ने साफ संकेत दे दिया है कि तृणमूल कांग्रेस के साथ उनका राजनीतिक सफर अब खत्म हो चुका है और आगे की राह वे अपने पुराने दल के साथ तय करेंगी। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, मौसम नूर और टीएमसी हाईकमान के बीच रिश्ते पिछले कई महीनों से तनावपूर्ण चल रहे थे। इस तनाव की जड़ें 2024 के लोकसभा चुनाव तक जाती हैं, जब मौसम नूर ने कथित तौर पर अपने भाई और कांग्रेस उम्मीदवार ईशा खान चौधरी के समर्थन में प्रचार किया था। तृणमूल कांग्रेस नेतृत्व ने इस कदम को पार्टी अनुशासन का खुला उल्लंघन माना।

कहा जाता है कि इस मुद्दे पर पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने उन्हें कड़ी फटकार लगाई थी। बाद में मौसम नूर ने सार्वजनिक रूप से माफी भी मांगी और भरोसा दिलाया कि भविष्य में वह ऐसा कोई कदम नहीं उठाएंगी जो पार्टी लाइन के खिलाफ हो, लेकिन इसके बावजूद उनके और नेतृत्व के बीच भरोसे की खाई पाटी नहीं जा सकी।

सूत्र बताते हैं कि इस घटनाक्रम के बाद मौसम नूर धीरे-धीरे पार्टी की अहम बैठकों से दूर होती चली गईं। जिला स्तर पर संगठनात्मक कामकाज को लेकर भी उनके प्रदर्शन से पार्टी संतुष्ट नहीं थी। इसी बीच उनका राज्यसभा कार्यकाल अप्रैल में समाप्त होने वाला है और फरवरी में संभावित राज्यसभा चुनावों की अधिसूचना को लेकर चर्चाएं तेज हैं। पार्टी के भीतर यह साफ संदेश मिलने लगा था कि इस बार मौसम नूर को दोबारा राज्यसभा भेजने के मूड में नेतृत्व नहीं है। न तो उन्हें नामांकन को लेकर कोई भरोसा दिया गया और न ही आगामी विधानसभा चुनाव में टिकट को लेकर कोई आश्वासन मिला।

ऐसे में मौसम नूर को अपना राजनीतिक भविष्य तृणमूल कांग्रेस में अधर में लटकता नजर आने लगा। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यही असुरक्षा और उपेक्षा की भावना उन्हें एक बार फिर कांग्रेस की ओर खींच लाई। शनिवार को कांग्रेस कार्यालय पहुंचकर पार्टी की सदस्यता ग्रहण करना इसी रणनीतिक फैसले का हिस्सा माना जा रहा है। खास बात यह है कि मौसम नूर का कांग्रेस से पुराना नाता रहा है। 2019 में उन्होंने कांग्रेस छोड़कर तृणमूल कांग्रेस का दामन थामा था, लेकिन करीब सात साल बाद उनकी घर वापसी ने बंगाल की राजनीति में नई चर्चाओं को जन्म दे दिया है। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की ओर से फिलहाल इस पूरे घटनाक्रम पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है, लेकिन पार्टी खेमे में हलचल साफ दिखाई दे रही है। अंदरखाने इसे पार्टी की सख्त अनुशासन नीति और चुनावी गणित से जोड़कर देखा जा रहा है। दूसरी ओर, कांग्रेस के लिए यह घटनाक्रम मनोबल बढ़ाने वाला माना जा रहा है, क्योंकि पार्टी लंबे समय से बंगाल में अपनी खोई जमीन वापस पाने की कोशिश में जुटी है।

राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा भी तेज है कि मौसम नूर आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ सकती हैं। अगर ऐसा होता है, तो यह मुकाबला और दिलचस्प हो जाएगा, क्योंकि वह तृणमूल कांग्रेस की अंदरूनी कार्यशैली और संगठनात्मक कमजोरियों से भली-भांति परिचित हैं। ऐसे में उनका मैदान में उतरना सत्तारूढ़ दल के लिए नई चुनौती बन सकता है।

कुल मिलाकर, मौसम नूर का कांग्रेस में जाना सिर्फ एक नेता का पार्टी बदलना नहीं, बल्कि यह संकेत भी है कि विधानसभा चुनाव से पहले तृणमूल कांग्रेस के भीतर असंतोष की धाराएं सतह पर आने लगी हैं। आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या मौसम नूर कांग्रेस के लिए बड़ा चेहरा बन पाती हैं या तृणमूल कांग्रेस इस झटके से उबरकर अपनी चुनावी रणनीति को और मजबूत करती है।

फर्जी डिग्री रैकेट पर बड़ा शिकंजा: शिमला अदालत ने फरार मां-बेटे को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया

(जीएनएस)। शिमला। देशभर में चर्चित शिमला फर्जी डिग्री घोटाले में अदालत ने कड़ा रुख अपनाते हुए बड़ी कार्रवाई की है। शिमला की विशेष पीएमएलए अदालत ने मानव भारती विश्वविद्यालय से जुड़े फर्जी डिग्री घोटाले के मुख्य आरोपी मनदीप राणा और उसकी मां अशोनी कंवर को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित कर दिया है। दोनों आरोपी लंबे समय से जांच एजेंसियों को चकमा देकर भारत से बाहर रह रहे थे और फिलहाल ऑस्ट्रेलिया में रहने की पुष्टि हुई है। अदालत ने यह फैसला शनिवार को सुनाते हुए स्पष्ट किया कि आरोपी लगातार न्यायिक प्रक्रिया से बचते रहे हैं, इसलिए उनके खिलाफ 2018 के भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम के तहत कार्रवाई पूरी तरह उचित है। प्रवर्तन निदेशालय के अनुसार मनदीप राणा और अशोनी कंवर सोलन स्थित मानव भारती विश्वविद्यालय के प्रमोटर हैं। इस विश्वविद्यालय पर वर्षों तक फर्जी शैक्षणिक डिग्रियां बेचने का आरोप है, जिसके जरिए देशभर के हजारों छात्रों को ठगा गया और भारी मात्रा में अवैध धन अर्जित किया गया। जांच में सामने आया कि इस रैकेट के जरिए न केवल युवाओं के करियर से खिलवाड़ किया गया, बल्कि शिक्षा व्यवस्था और कानून का भी खुला उल्लंघन हुआ। ईडी का दावा है कि इस पूरे घोटाले से करीब 387 करोड़ रुपये की आपराधिक आय अर्जित की गई। ईडी ने इस मामले में वर्ष 2020 में धन शोधन निवारण अधिनियम के तहत केस दर्ज किया था। जांच आगे बढ़ने पर दिसंबर 2022 में मुख्य आरोपी राज कुमार राणा सहित 15 लोगों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया। जनवरी 2023 में विशेष पीएमएलए अदालत ने मनदीप राणा और अशोनी कंवर को समन जारी किए, लेकिन दोनों ने अदालत के आदेशों की अनदेखी की। इसके बाद नवंबर 2023 में उनके खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किए गए, बावजूद इसके आरोपी पेश नहीं हुए और लगातार फरार बने रहे।

अदालत द्वारा भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किए जाने के बाद अब ईडी को उनकी संपत्तियों को जब्त करने का अधिकार मिल गया है। एजेंसी के अधिकारियों के मुताबिक, भारत और विदेशों में मौजूद चल-अचल संपत्तियों की पहचान कर उन्हें अटैच करने की प्रक्रिया तेज की जाएगी। इस कार्रवाई का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आर्थिक अपराध करके देश छोड़ने वालों को किसी भी सूरत में कानून से बचने न दिया जाए।

गौरतलब है कि भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम उन मामलों में लागू किया जाता है, जहां 100 करोड़ रुपये या उससे अधिक की धोखाधड़ी कर आरोपी देश से फरार हो जाते हैं। इससे पहले शराब कारोबारी विजय माल्या और हथियार सौदों से जुड़े संजय भंडारी को भी इसी कानून के तहत भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया जा चुका है।